पौलुस की गलातियों को पत्री

पुनर्कथित,
व्याख्यायित,
आज के लिए।

GOOD NEWS

पौलुस की गलातियों को पत्री

पुनर्कथित, व्याख्यायित, आज के लिए।

Hans-Jörg Ronsdorf

केवल जब पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करता है, तभी तुम सचमुच स्वतंत्र हो।

यूहन्ना 8:36

पुस्तक-परिचय

गलातियों को लिखी पत्री को अपने शब्दों में फिर से कहा गया है, अर्थात् समझाते हुए प्रस्तुत किया गया है। पाठ की मात्रा किसी पारंपरिक बाइबल-अनुवाद के मूल बाइबल-पाठ से लगभग तीन गुना है।

1. संस्करण अप्रैल 2020

© Hans-Jörg Ronsdorf – सर्वाधिकार सुरक्षित।

Albis 6 ½

87477 Sulzberg

hj-ronsdorf@t-online.de

www.hans-joerg-ronsdorf.de

जर्मन संस्करण का ISBN: 978-3-9820715-3-4

आवरण-सज्जा: तोबियास श्ट्रिकर (Tobias Stricker)

प्रारंभ में

आप गलातियों को लिखी पौलुस की पत्री का एक **व्याख्यात्मक रूपांतर** अपने हाथ में लिए हुए हैं। लेखक के रूप में मैं स्वयं को लिखने वाले की स्थिति में रखता हूँ और उसके विचारों को समझाते हुए, और इसलिए अधिक विस्तार से, काग़ज़ पर उतारने का प्रयास करता हूँ। मेरा पाठ मूल पाठ से लगभग तीन गुना लंबा है। दूसरे शब्दों में: यदि मैं किसी को यह पत्री, या हर पद, संक्षेप में और सटीक ढंग से समझाऊँ, तो वह ठीक वही होगा जो आप यहाँ पढ़ने वाले हैं।

मुझे आशा है कि इसके द्वारा आप पत्री का संदेश बेहतर समझेंगे और अपने जीवन से उसका संबंध पाएँगे। क्योंकि बात इसी की है। मेरा पाठ परमेश्वर का वचन नहीं है, पौलुस की मूल पत्री से बिल्कुल भिन्न। उसे आप स्वयं किसी बाइबल में पढ़ सकते हैं, या मेरे पाठ के साथ-साथ।

इसलिए यहाँ आपसे मेरा एक निवेदन है – भूमिका पढ़ने से पहले: **एक बाइबल हाथ में लीजिए और पहले उसमें यह पूरी पत्री एक बार पढ़ डालिए।** ऊँची आवाज़ में पढ़ना सहायक होता है। यदि कुछ समझ में न भी आए, तो पढ़ते रहिए। इस तरह आपको एक पहली छाप मिलेगी, या आपकी स्मृति ताज़ा हो जाएगी। आप देखेंगे: गलातियों की पत्री – शायद पौलुस की पहली और सबसे पुरानी पत्री – एक बहुत सुंदर पत्री है। वह सुसमाचार के सबसे गहरे तारों को छूती है और उन्हें पूरी तरह गूँजने देती है। **यह एक ऐसी पत्री है जो केवल मसीहियों से ही नहीं, बल्कि यहूदियों और मुसलमानों से भी बात करती है। अंतर-धार्मिक संवाद में वह यह दिखाने में सहायता करती है कि सुसमाचार क्या है और वह अन्य सब धर्मों से किस बात में भिन्न है।**

क्या हुआ था?

नए नियम की अधिकांश पत्रियों का कोई न कोई कारण होता है। यहाँ भी ऐसा ही है।

एक क्षण के लिए स्वयं को प्रेरित और मिशनरी पौलुस की स्थिति में रखिए। वह अपने सहकर्मी के साथ कठिन रास्तों से होकर टॉरस पर्वतमाला पार कर चुका है और अनातोलिया (तुर्की) के पहाड़ों में पैदल यात्रा कर रहा है। पूरी तरह थका-हारा वह वहाँ गलातिया के क्षेत्र में लोगों से मिलता है और उन्हें उस मसीह का प्रचार करता है जो उनके लिए क्रूस पर मरा। ये लोग – पौलुस से भिन्न – यहूदी नहीं हैं। संभव है कि ये लोग यहूदियों को भी और उनके रीति-रिवाजों को भी जानते हों। वे स्वयं अलग-अलग मूर्तियों की पूजा करते हैं और एक सच्चे परमेश्वर को नहीं जानते। सुसमाचार का संदेश इन लोगों के हृदय में उतर जाता है, और वे मन फिराते हैं, पश्चाताप करते हैं और यीशु मसीह पर जीवित विश्वास में आ जाते हैं। यह विश्वास जीवित है, वह सब चेलों की संगति में एक नए जीवन के द्वारा दिखाई देता है।

कुछ समय बाद यह हुआ: पौलुस बहुत पहले ही आगे जा चुका है। अब यहूदी-मसीही शिक्षक (**यहूदीवादी**) इन मसीहियों के पास आए और माँग करने लगे: यदि तुम सचमुच परमेश्वर की प्रजा में शामिल होना चाहते हो, यदि तुम अब्राहम की सन्तान और उसकी प्रतिज्ञा के वारिस बनना चाहते हो, तो तुम्हें बस अब अपना **ख़तना** करवाना होगा (मानो यहूदी बन जाना)। ख़तना वाचा का चिह्न था, जो अब्राहम के समय से हर इस्राएली के लिए अनिवार्य है, ताकि वह इस वाचा का, उसकी आशीषों और उसके दायित्वों सहित, भागी हो।

ये यहूदी-मसीही शिक्षक (यहूदीवादी) क्या सिखाते थे?

ये मसीही यहूदी मसीह को अस्वीकार नहीं करते थे। पर पौलुस को और **उसके सुसमाचार** को अवश्य। वे यह भी नहीं सिखाते थे कि मनुष्य व्यवस्था के अच्छे कर्मों के द्वारा परमेश्वर के सामने धर्मी ठहरता है। वे सिखाते थे कि **ख़तने के द्वारा ही मनुष्य सचमुच परमेश्वर की प्रजा में शामिल होता है**।

आपस का सामाजिक व्यवहार (अर्थात् यहूदियों और अन्यजातियों में से आए मसीहियों के बीच) भी आसान हो जाता। यहूदी अन्यजातियों के साथ, अर्थात् ख़तनारहित लोगों के साथ, एक मेज़ पर भोजन नहीं करते थे। यद्यपि यह मूसा की कोई आज्ञा नहीं, बल्कि जोड़ी गई, मानवीय, यहूदीवादी आज्ञा थी।

ये यहूदीवादी यह नहीं समझ सकते थे और समझना भी नहीं चाहते थे कि मसीह के आगमन के साथ मूसा की व्यवस्था का युग समाप्त हो गया। वे सोचते थे कि परमेश्वर अब्राहम की प्रतिज्ञाओं को फैलाने के लिए केवल यहूदी राष्ट्र के द्वारा काम करता है। इसके विपरीत पौलुस का तर्क है: **परमेश्वर की उद्धार-योजना में व्यवस्था ने अब अपना उद्देश्य पूरा कर लिया है**, और इसलिए उसका पालन करना गलत है। और अन्यजातियों से उसे स्वीकार करने की माँग करना भी। यह मानना गलत है कि परमेश्वर अब भी राष्ट्रवादी ढंग से, अर्थात् इस्राएल के द्वारा, काम करता है। परमेश्वर की प्रजा अब सब जातियों के लोगों से बनी है।

कम से कम तीन कारणों से पौलुस यहूदीवादियों और उनकी शिक्षा की निंदा करता है: (1) वे **मसीह के छुटकारे के कार्य की पूर्ण पर्याप्तता और सार्वभौमिकता** को नहीं समझे। (2) वे नहीं समझे कि मसीह और आत्मा मूसा की व्यवस्था और उसके राष्ट्रीय स्वरूप से कहीं बढ़कर हैं। (3) और उन्होंने नहीं पहचाना कि परमेश्वर सब विश्वासियों को (यहूदियों और अन्यजातियों को) पवित्र आत्मा देता है। जिसका परिणाम यह है कि मसीहियों को व्यवस्था के द्वारा चलाए जाने की आवश्यकता नहीं। इसके बजाय उनके पास आत्मा है, जो उन्हें ऐसे ढंग से चलाता है जो नैतिक व्यवस्था (जैसे दस आज्ञाएँ, सब्त की आज्ञा को छोड़कर) के अनुरूप है। और उसे पूरा भी करता है – पर उसे लक्ष्य नहीं बनाता। **आत्मा की अगुवाई मूसा की व्यवस्था की ओर वापस नहीं ले जाती, बल्कि एक ऐसे जीवन में ले जाती है जिसमें मसीह की व्यवस्था और परमेश्वर का आत्मा नई सृष्टि के जीवन का नियम बन जाते हैं।**

एक यहूदी प्रातःकालीन प्रार्थना (कुछ) यहूदियों की आत्म-छवि को दिखाती है:

हे सनातन, हमारे परमेश्वर, जगत के राजा, तू धन्य है, जिसने मुझे अन्यजाति **नहीं** बनाया। हे सनातन, हमारे परमेश्वर, जगत के राजा, तू धन्य है, जिसने मुझे दास **नहीं** बनाया। हे सनातन, हमारे परमेश्वर, जगत के राजा, तू धन्य है, जिसने मुझे स्त्री **नहीं** बनाया।

यह राष्ट्रीय घमण्ड है; यह सामाजिक प्रतिष्ठा और लिंग के आधार पर भेदभाव है। पौलुस इसके विरुद्ध जड़ से कार्रवाई करता है, जैसा कि इस पत्री में सीखा जा सकता है।

पौलुस इतना विचलित क्यों है?

किसी और पत्री में पौलुस इन यहूदीवादी व्यवस्था-शिक्षकों का खंडन करने और उनकी निंदा करने में इतना कठोर नहीं है। **गलातियों ने ध्यान नहीं दिया कि सुसमाचार का सत्य और उसकी अद्वितीयता हाथ से फिसलकर डूब रही थी।** वे मसीह को बनाए रखना चाहते थे, पर उनके मन में यह बात बिठाई गई कि उन्हें मूसा और ख़तने की भी आवश्यकता है। तब वे सचमुच अब्राहम के पुत्र होंगे और परमेश्वर की चुनी हुई प्रजा में शामिल होंगे।

जब गलातियों ने **यीशु के साथ मूसा को भी** चुना, तो यहूदीवादी इस आवश्यकता को ही नष्ट कर देते हैं कि हमें मसीह की ज़रूरत है भी। पौलुस स्पष्ट करता है: “यदि धार्मिकता व्यवस्था के द्वारा प्राप्त हो सकती है, तो मसीह व्यर्थ मरा” (2:21), और: “यदि तुम ख़तना करवाओगे, तो मसीह से तुम्हें कुछ भी लाभ न होगा” (5:2)। आत्मा में परमेश्वर की सामर्थ्य के इनकार के विषय में पौलुस कहता है: “यदि तुम आत्मा के चलाए चलते हो, तो व्यवस्था के अधीन नहीं हो” (5:18)। इसका अर्थ है कि जो आत्मा को चुनते हैं, उन्हें उसकी व्यवस्था की ज़रूरत नहीं; जो यीशु को चुनते हैं, वे मूसा को नहीं चुनते। दोनों एक साथ नहीं हो सकते। पौलुस का संदेश समझौता-रहित है: **केवल मसीह**।

पौलुस किस प्रकार की व्यवस्था की निंदा करता है?

जब बात मूसा की व्यवस्था, अर्थात् तोराह, की हो, तो यह दृढ़ता से कहना आवश्यक है कि वह पवित्र और अच्छी है। उसमें केवल दस आज्ञाएँ ही नहीं आतीं – कुल मिलाकर उसमें मूसा की पाँचों पुस्तकें शामिल हैं। इस्राएल के पड़ोसी लोगों की तुलना में वह नैतिक-आचारिक रूप से अद्वितीय और श्रेष्ठ है। आज तक। हमारे जर्मन संविधान में भी उसका अच्छा प्रभाव पहचाना जा सकता है। पौलुस कभी भी व्यवस्था की, और उसे पूरा करने के हर प्रयास की, निंदा नहीं करता। व्यवस्था परमेश्वर की ओर से उसकी प्रजा इस्राएल को दिया गया एक अद्भुत वरदान है। पौलुस ने उसका पालन किया। यदि किसी ने अनजाने में उसका उल्लंघन किया होता, तो मूसा की व्यवस्था की बलि-सेवा क्षमा दिला सकती थी।

फरीसियों ने व्यवस्था में मानवीय आज्ञाएँ जोड़ दी थीं और जीवन के अधिक से अधिक क्षेत्रों को – हाथ धोने तक – धार्मिक नियमों में बाँधने का प्रयास किया था। यह बंधन उन्होंने अपने ऊपर और लोगों के ऊपर लाद दिया था। वे यीशु के समय का एक यहूदी समूह थे, जो व्यवस्था को बहुत गंभीरता से लेता था – और चाहता था कि सब यहूदी ऐसा ही करें। एक प्रकार का भक्ति-आंदोलन। पौलुस स्वयं कभी उन्हीं में से एक था। एक जोशीला, जब तक मसीह उसके जीवन में न आया। यीशु के साथ उनकी समस्या थी, क्योंकि वह उनकी असलियत भाँप लेता था। उसने **मानवीय आज्ञाओं** की कड़ी आलोचना की। और बड़ी आज्ञाओं की उपेक्षा की भी – **परमेश्वर से और अपने साथी मनुष्यों से प्रेम करने** की आज्ञाओं की। ये सबसे महत्त्वपूर्ण आज्ञाएँ पीछे छूट गईं। मत्ती 23 में पढ़ा जा सकता है कि यीशु फरीसियों और उनके व्यवस्थावाद के बारे में क्या सोचता था।

गलातियों की पत्री में व्यवस्थावाद (लीगलिज़्म) का अर्थ है परमेश्वर को भाने के लिए मूसा की व्यवस्था से चिपके रहना। पर इसका अर्थ केवल नियमों पर अड़े रहना नहीं है। इस व्यवस्थावाद में गलत बात यह है **कि वह मसीह और आत्मा को हटाकर उनकी जगह ले लेता है।** वह गलत है, क्योंकि वह (1) यह नहीं समझता कि मसीह में और आत्मा के द्वारा मूसा की व्यवस्था पूरी हो चुकी है और इस प्रकार सदा के लिए इतिहास बन चुकी है। इसके अतिरिक्त यह गलत है कि (2) यहूदीवादी **अन्यजातियों को यहूदी बनने के लिए विवश करते हैं** (ख़तने के द्वारा)। इस अर्थ में पौलुस व्यवस्था के उस अबाइबलीय दृष्टिकोण पर, उसके राष्ट्रवादी रूपों सहित, प्रहार करता है, जिसका ये यहूदीवादी समर्थन करते हैं।

व्यवस्था के कर्म क्या हैं?

ये यहूदीवादियों के ऐसे आचरण या उपाय हैं जो एक ओर तो मूसा की व्यवस्था से मेल खाते हैं। पर यह दावा करना गलत था कि मसीह के छुटकारे का कार्य और आत्मा की अगुवाई दैनिक जीवन के लिए अपर्याप्त हैं।

"व्यवस्था के कर्म" वे काम हैं जो एक ऐसी व्यवस्था के द्वारा निर्धारित किए जाते हैं जिसे अब मसीह और आत्मा ने हटा दिया है। "व्यवस्था के कर्म" इसके अतिरिक्त वे यहूदी रीतियाँ हैं जो यहूदियों और ग़ैर-यहूदियों के बीच सीमाएँ खड़ी करती हैं। परमेश्वर की व्यवस्था का ध्यान उन सामाजिक सीमाओं पर नहीं है जो अलग करती हैं। इसके बजाय उसमें सब मनुष्यों के लिए प्रकट की गई परमेश्वर की इच्छा देखी जा सकती है।

आज का व्यवस्थावाद

केल्टों (गलातियों) की समस्या को 2000 वर्ष बाद हमारे समय और संस्कृति में **1:1** (ज्यों का त्यों) नहीं उतारा जा सकता। फिर भी आज हमारे लिए उसमें सबक हैं। प्रश्न यह है: हम परमेश्वर की महिमा के लिए कैसे जी सकते हैं? क्या मूसा की व्यवस्था या दस आज्ञाएँ इसमें हमारी सहायता नहीं कर सकतीं?

गलातियों की पत्री का उत्तर है: **हम में मसीह** और **हम में परमेश्वर का आत्मा** "**आत्मा का फल**" उत्पन्न करते हैं। हमारे दैनिक जीवन में। यह **मसीह की व्यवस्था** के अनुरूप है।

बहुत से मसीहियों के भीतर विचारों और भावनाओं का एक ऐसा तंत्र चलता है, जो उन्हें मुफ़्त में दिए गए अनुग्रह से हटाकर उपलब्धि की स्थिति में ले जाता है: वे अधिक परमेश्वर-भीरु बनना और परमेश्वर के अधिक निकट आना चाहते हैं। वे महसूस करते हैं कि सक्रियता उन्हें बल देती है और उनके लिए अच्छी है। पर इसमें वे इस धोखे को नहीं पहचानते कि यह उनकी अपनी उपलब्धि और कर्तव्य-पालन है, जो उन्हें एक दिखावटी पवित्रता या आत्मिकता का एहसास देता है। पर हमारे पास मसीह में सब कुछ है और हम उसमें सब कुछ हैं – और वह हम में है। इसमें कुछ भी जोड़ा नहीं जा सकता।

हम व्यवस्थावाद को कैसे पहचानें? हम ऐसी रीतियों, दृष्टिकोणों, माँगों, निर्देशों और धर्मशास्त्रीय विचारों को खोजते हैं, **जो सुसमाचार की केंद्रीय बातों की – मसीह और उसके छुटकारे के कार्य की पूर्ण पर्याप्तता की, और हमारे दैनिक आपसी जीवन के लिए पवित्र आत्मा की केंद्रीयता की – उपेक्षा करते हैं।**

इसका अर्थ यह नहीं कि हम अपनी कलीसियाओं या मंडलियों में बस ऐसे अप्रिय नियम या बाध्यकारी निर्देश खोजें जो हमें पसंद नहीं। नियम वास्तव में आत्मिक विकास के लिए अच्छे हो सकते हैं। व्यवस्थावाद, यदि उसे अच्छे नियमों और आदतों के अर्थ में समझा और जिया जाए, तो अपने आप में कोई बुरी बात नहीं। इसलिए इस शब्द का प्रयोग सोच-समझकर करना चाहिए। क्योंकि यदि कोई मसीही नियमित रूप से बाइबल पढ़ता है, नियमित रूप से प्रार्थना करता है, नियमित रूप से आराधना में जाता है, तो यह फरीसियों का या गलातिया के यहूदीवादियों का व्यवस्थावाद नहीं है। परमेश्वर के राज्य में अनुशासन उपयोगी और अक्सर आवश्यक है। पर कुछ बातें तलवार की धार पर चलने जैसी हैं। यदि मैं ये काम इसलिए करता हूँ कि तब मैं मसीहियों के बीच स्वयं को महत्त्वपूर्ण और परमेश्वर द्वारा अधिक प्रिय या अधिक चहेता समझूँ, तो मैं धार्मिक दिखावे के जाल में फँस गया हूँ। बहुत-सी अच्छी बातें व्यवस्थावाद बन सकती हैं। एक बाहरी रूप के तौर पर, जो हृदय से नहीं निकलता। परमेश्वर के प्रति प्रेम से नहीं। अच्छी आत्मिक आदतें मसीही जीवन का पक्का हिस्सा हैं और व्यवस्थावाद नहीं हैं। पर वे बन सकती हैं।

यह पत्री आज के लिए क्या सबक देती है?

प्रभु यीशु मसीह के पदचिह्नों पर हमारा चलना **विश्वास** में होता है। पिता पर भरोसे में। बच्चों की तरह, जो यीशु का हाथ थामे रहते हैं।

अपने समर्पण के बावजूद हम अपनी इस **असमर्थता** से अवगत हैं कि हम अपनी शक्ति से भलाई नहीं कर सकते। मसीही होकर भी, और विशेषकर मसीही होकर। इसलिए हम स्वयं को किसी धार्मिक उपलब्धि के दबाव में नहीं डालते। हम दिखावा नहीं करते। कपट व्यवस्थावाद का भाई है। हम अपने प्रति, दूसरों के प्रति और परमेश्वर के प्रति ईमानदार हैं, जो हमारे हृदयों को जानता है। वह जानता है कि हम उससे प्रेम करते हैं। जैसे उस समय पतरस, जब वह यीशु की सबसे कठिन घड़ी में पूरी तरह असफल हो गया था। फिर भी पतरस यीशु से प्रेम करता था, चाहे गलतियाँ और असफलता हुई। इसलिए: हम अपने जीवन में **पवित्रीकरण का कोई तनाव** घुसने नहीं देते। वह घमण्ड या निराशा और असफलता के भय की उपजाऊ भूमि है। हम स्वतंत्रता में और अनुग्रह में जीते हैं। **हम सदा के लिए स्वीकार किए गए हैं – अपनी सब गलतियों के साथ, अपनी सब कमज़ोरियों के साथ, और हाँ, उन सब पापों के साथ जो हम करते हैं। क्योंकि हम मसीह के हैं, जो हमारे पापों के लिए मरा।**

परमेश्वर हमें जो कुछ देता है, वह हमारी विश्वासयोग्यता, उपलब्धि या दृढ़ता का उत्तर नहीं है। सब कुछ हम पाते, अनुभव करते, आनंद से भोगते और प्राप्त करते हैं – परमेश्वर की हर सन्तान – विश्वास के आधार पर। अपने परमेश्वर पर बच्चे जैसे, लगभग अंधे भरोसे के आधार पर। विश्वास परमेश्वर के हृदय को छूता है। उसके लिए यही बात मायने रखती है। इसी तरह हम उसे महिमा देते हैं। ऐसा विश्वास, जो कहता है: हमें यीशु और आत्मा की आवश्यकता है, और किसी की नहीं।

बेटियों और बेटों के रूप में परमेश्वर की बिना शर्त स्वीकृति में जीना स्वतंत्रता है। स्वतंत्रता में हम परिपक्व होते हैं। अच्छा फल दिखाई देने लगता है। **मसीह हम में आकार लेता है।**

धार्मिक और मसीही व्यवस्थावाद के उदाहरण

हमारे समय से उदाहरण देना हमेशा रोचक होता है। क्योंकि व्यवस्थावाद के बहुत अलग-अलग रूप हैं। तेज़ ख़ुराक में भी, और बची-खुची मात्रा में भी। व्यक्तिगत जीवन में भी और सामूहिक जीवन में भी।

सबसे स्पष्ट और सबसे फैला हुआ व्यवस्थावाद मुझे वहाँ मिला है जहाँ लोग अच्छे कामों से उद्धार कमाने का प्रयास करते हैं। पर उद्धार हम योग्यता से नहीं पाते, न मानवीय मध्यस्थता से, न संस्कारों से। हम उसे केवल मसीह के द्वारा पाते हैं।

गलातियों की पत्री में यह बात भी है कि व्यवस्थावाद को इसलिए चुना जाता है ताकि उस तरह जिया जाए जिससे परमेश्वर का आदर होता है। और जैसा उचित है, जब कोई परमेश्वर की प्रजा का हिस्सा बनना चाहता है। इस प्रकार का व्यवस्थावाद भी पौलुस को उतना ही अस्वीकार्य है जितना पहला। जो उदाहरण मैं देता हूँ, उन्हें, यदि कोई चाहे, तो गलत समझा जा सकता है।

उदाहरण: जब कोई बाइबल पढ़ने और प्रार्थना के समय के लिए बहुत कम या बिल्कुल समय नहीं निकाल पाता। जब “शांत समय” अक्सर छूट जाता है। अनचाहे या लापरवाही से। तब अपराध-बोध उठ सकता है। व्यक्ति स्वयं को दोषी या अयोग्य महसूस करता है। स्वयं को असफल समझता है। पर इससे पता चलता है कि हमने यह नहीं समझा कि हम मसीह में बेटों और बेटियों के रूप में बिना शर्त स्वीकार किए गए हैं। पिता के साथ यह संबंध अटल है। हमेशा! हम हर समय प्रिय हैं और 100 % स्वीकार किए हुए हैं। निश्चय ही बाइबल-पठन और प्रार्थना महत्त्वपूर्ण हैं। पर पहली शताब्दियों के अधिकांश मसीहियों के पास बाइबल नहीं थी, और फिर भी वे यीशु के प्रभावशाली गवाह थे, जिनका विश्वास पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में प्रेम के द्वारा प्रभावशाली था।

उदाहरण: पवित्र आत्मा में अलौकिक अनुभव होते हैं, जैसे जागृतियाँ, चंगाइयाँ, चमत्कार, आत्मा में उठा लिया जाना, अन्य भाषाएँ बोलना और प्रार्थना के विशेष अनुभव। जो ऐसा कुछ अनुभव करता है, पर फिर कुछ समय तक ऐसा कुछ नहीं, उसे इससे यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि अब वह कम प्रिय है। ये अनुभव कभी यह सिद्ध नहीं करते कि कोई अधिक या कम प्रिय है। यदि वे न हों, तो परमेश्वर के साथ हमारे संबंध में कुछ नहीं बदलता। यद्यपि कारण खोजे जा सकते हैं, पर इस बात पर कभी निराश नहीं होना चाहिए। **हम विश्वास से जीते हैं, देखने और अनुभवों से नहीं।**

किसी को भी किसी मसीही पर अनुभव या ज्ञान थोपने का अधिकार नहीं (जैसे आत्मा का बपतिस्मा, अन्य भाषाएँ बोलना), ताकि वह “पूरा” या “सच्चा” मसीही हो। किसी को यह आदेश देने का अधिकार नहीं कि प्रभु-भोज को कैसे समझना और मनाना है, ताकि कोई “विश्वासयोग्य” मसीही हो। उसी तरह किसी को बालों और कपड़ों के मानदंड, आराधना की विधियाँ या बैठने की व्यवस्था निर्धारित करने का

अधिकार नहीं। किसी को किसी मसीही पर यह दबाव डालने का अधिकार नहीं कि संसार से अलग रहने के लिए राजनीति के संबंध में उसे कैसा व्यवहार करना है। बाइबल के निर्देशों की सीमा के भीतर बड़ी स्वतंत्रता है। क्या उचित है और क्या नहीं, इस विषय में हर संकीर्णता या भय एक व्यवस्थावादी, दुर्बल विश्वास का संकेत है और परमेश्वर के बेटों और बेटियों की पूर्ण परिपक्वता के अनुरूप नहीं है।

जब ऐसी बातें एक-दूसरे को संगति से वंचित करने का कारण बन जाती हैं, रोटी तोड़ने में भी, तो यह फरीसियों और यहूदीवादियों जैसा व्यवस्थावाद है। **कुछ लोग भीतर हैं और दूसरे बाहर।** गलातियों की पत्री में जिस एकता पर ज़ोर दिया गया है (3:28), उसे देखते हुए यह एक कलंक है।

दोष लगाने वाला मन, जो दूसरों को दोषी ठहराता और अयोग्य घोषित करता है, ठीक यहूदीवादियों के रवैये के अनुरूप है। वे कहते थे: यदि तेरा ख़तना हुआ है, तो तू हम में शामिल है और सब ठीक है (चाहे व्यवस्था और जो कुछ कहती थी, उसकी परवाह न हो)। मानवीय रूपों और विधियों का पालन मनुष्यों और परमेश्वर के सामने कपट में बदल जाता है, यदि बस यही सारी भक्ति है जिसे कोई जीता है।

बहुत-से तरीके अच्छे हैं, जब तक वे मसीह में जीवन और आत्मा के आनंद तथा स्वतंत्रता के विरुद्ध काम नहीं करते या उन्हें बुझा तक नहीं देते।

आज व्यवस्थावाद शायद ही कोई विषय रह गया है। बल्कि उसकी उलटी प्रतिक्रिया है, कि अब किसी बात का पालन करना ज़रूरी नहीं, और स्वतंत्रता उत्तरदायित्व की भावना के बिना स्वार्थी और व्यक्तिवादी जीवन-शैली में समाप्त होती है। इस प्रकार स्वतंत्रता को गलत समझा जाता है और वह ख़तरा बन जाती है। पौलुस इस पत्री में इसकी ओर ध्यान दिलाएगा, ताकि हम घोड़े से दूसरी ओर न गिर पड़ें।

अंत में: नहीं, मसीही होने के नाते हम व्यवस्था को कृतज्ञता के कारण भी पूरा नहीं करते, जैसा अक्सर कहा जाता है। तथ्य यह है, जैसा रोमियों 8:4 दिखाता है, कि जो मसीह के पीछे चलते हैं और आत्मा के द्वारा चलाए जाते हैं, वे परमेश्वर के परिपक्व पुत्रों के रूप में व्यवस्था की नैतिक माँगों को स्वाभाविक रूप से पूरा करते हैं। परमेश्वर की व्यवस्था और आत्मा का कार्य एक-दूसरे का विरोध कैसे कर सकते हैं? पर वे नैतिक व्यवस्था को इसलिए पूरा नहीं करते कि वह उनका मापदंड है, बल्कि इसलिए कि आत्मा और मसीह उनमें जीते हैं। **मूसा की व्यवस्था का समय सदा के लिए बीत चुका है। मसीह की व्यवस्था अब आत्मा की अगुवाई में चलने वाले जीवन का सार है।**

व्यवस्था से स्वतंत्रता किसी **"सस्ते अनुग्रह"** को बढ़ावा नहीं देती, जिसमें इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि हम कैसे जीते हैं। स्वतंत्रता मनमानी की छूट नहीं है। वह बढ़ाती भी है और माँगती भी है। स्वतंत्रता और अनुग्रह ज़िम्मेदारी देते हैं। रहस्यमय ढंग से परमेश्वर का आत्मा हम में वह फल उत्पन्न करता है, जिस पर हम स्वयं कृतज्ञता के साथ अचंभा कर सकते हैं। यह कोई बाहरी नियंत्रण नहीं, बल्कि एक नए जीवन में आत्म-निर्णय है। यह हम में मसीह है। यह पुत्रत्व का आत्मा है, जो हम में और हमारे भीतर से पिता को पुकारता है: अब्बा, पापा, पिता!

गलातियों की पत्री: मसीही स्वतंत्रता और सुसमाचार का मैग्ना कार्टा

जो सुसमाचार पौलुस पर परमेश्वर की ओर से प्रकट हुआ, वह सब मनुष्यों के लिए मसीह में उद्धार, धर्मी ठहराया जाना और दोषमुक्ति लाता है। और जीने की सामर्थ्य के रूप में पवित्र आत्मा का वरदान। परमेश्वर के बेटे और बेटियाँ बनाए जाकर वे स्वतंत्रता में जीते हैं, उस विश्वास के द्वारा जो प्रेम में और आत्मा के फल में दिखाई देता है।

बात यह है कि मसीह आत्मा के द्वारा हमारे जीवन को उत्तरदायी स्वतंत्रता और सेवा करने वाले आत्म-समर्पण में ऐसा बदल देता है कि व्यवस्था की कठोर माँगें (और मानवीय जोड़) भी पीछे छूट जाती हैं।

इसके साथ मूसा की व्यवस्था, ख़तना, और प्रतिज्ञा के एकमात्र वाहक तथा आशीष के मध्यस्थ के रूप में इस्राएल की राष्ट्रीय पहचान – सब अतीत की बातें हो गईं। यह सब अब केवल उसकी छाया है जो मसीह में आ चुका है। दोनों को कभी भी जोड़ा या मिलाया नहीं जा सकता।

पत्री के विषय और उनके विरोधी पक्ष

पुराना, बीता हुआ – और नया, जो मसीह में आ गया है। एक सिंहावलोकन, बिना किसी मूल्यांकन वाले क्रम के।

मसीह	मूसा
परमेश्वर का पवित्र आत्मा	व्यवस्था
परमेश्वर का पवित्र आत्मा	शरीर, पापमय मानवीय स्वभाव
विश्वास, भरोसा, विश्वासयोग्यता	व्यवस्था के कर्म, करना
प्रतिज्ञा, परमेश्वर का वचन-दान	व्यवस्था
परमेश्वर की आशीष	श्राप, व्यवस्था के उल्लंघन के परिणाम
स्वतंत्रता	दासत्व
परिपक्व पुत्रत्व	दासत्व; निगरानी में रखा गया बालपन।
मीरास	अनिश्चितता
नई सृष्टि; अनन्त जीवन	ख़तना/खलड़ी
अनुग्रह	व्यवस्था
कलीसिया की एकता	दूसरों को बाहर रखने वाला यहूदी राष्ट्र
जल में बपतिस्मा	खलड़ी का ख़तना
धर्मी ठहराया जाना, दोषमुक्ति	दोषी ठहराया जाना
सुसमाचार, शुभ संदेश	व्यवस्था
गुलगुता का क्रूस	बुरा वर्तमान युग, शरीर
इसहाक	इश्माएल
ऊपर का यरूशलेम	सांसारिक यरूशलेम, सीनै
नई वाचा	पुरानी वाचा
सारा, स्वतंत्र स्त्री	हाजिरा, दासी, परतंत्र

गलातियों की पत्री में मसीही

नए नियम की हर पत्री अपने ढंग से बताती है कि परमेश्वर ने हम मनुष्यों को क्या बना दिया, जब उसने हमें अपनी ओर खींचा। हमें क्या-क्या वरदान मिले और अब अनुग्रह से हम क्या बन गए हैं। सचमुच यह एक पूरी "उद्धार-सूची" है, जो अपने आप में अचंभे में डाल देती है। किसने कभी सोचा होगा कि सनातन परमेश्वर ने हमारे लिए इतना कुछ तैयार रखा है और इसके लिए अपना ही पुत्र तक दे दिया। यहाँ गलातियों की पत्री के वे सब पाठ हैं जो विश्वास करने वाले के बारे में कुछ कहते हैं। परमेश्वर चाहता है कि हम इस पर विश्वास करें, इस पर अपना जीवन बनाएँ और इसे अपने जीवन में अनुभव करें। **उद्धार का पूरा धन** हमें दे दिया गया है। अब बात यह है कि इसे दैनिक जीवन में बिल्कुल व्यावहारिक रूप से अपने अधिकार में लें। और इसे जिएँ (और अनुभव करें)।

- यीशु ने हमारे पापों के लिए अपने आप को बलिदान कर दिया (1:4)।
- वर्तमान बुरे संसार (या वर्तमान युग) से बचाकर निकाले गए (1:4)
- मसीह यीशु में स्वतंत्रता (2:4; 5:1)
- मसीह पर विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए गए (2:16-17)
- व्यवस्था के लिए मर गए (2:19)
- परमेश्वर के लिए जीना (2:19)
- मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाए गए (2:19)
- मसीह विश्वासी में जीवित है (2:20)
- मसीह के प्रिय (2:20)
- आत्मा पाया (3:2, 5)
- विश्वास के द्वारा आशीष पाए हुए (3:9)
- व्यवस्था के श्राप से मोल लेकर छुड़ाए गए (3:13)
- पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा पाई (3:14)
- व्यवस्था से नहीं, बल्कि विश्वास से जीवन (3:21-22)
- विश्वास के द्वारा परमेश्वर के पुत्र (3:26)
- हमने मसीह को पहन लिया है (3:27)।

- हम मसीह में हैं (3:28; 5:6)।
- हम मसीह के हैं (उसकी निज संपत्ति) (3:29; 5:24)।
- पुत्रत्व के लिए मोल लेकर छुड़ाए गए (4:5-6)
- पुत्र का आत्मा हमारे हृदयों में है (4:6)।
- परमेश्वर हमारा प्रिय पिता है (4:6)।
- परमेश्वर के द्वारा वारिस (4:7)
- मसीह हम में आकार लेता है (4:19)।
- आत्मा के अनुसार (आत्मा से) जन्मे (4:29)
- परमेश्वर द्वारा बुलाए गए (5:8, 13)
- हम आत्मा के द्वारा काम करते हैं (5:16, 25)।
- आत्मा हमारी अगुवाई करता है (5:18)।
- हम आत्मा के द्वारा जीते हैं (5:25)।
- परमेश्वर के राज्य के वारिस (5:21)
- अनन्त जीवन (पुनरुत्थान में) (6:8)
- विश्वास के घराने के लोग (6:10)
- संसार के लिए क्रूस पर चढ़ाए गए (6:14)
- एक नई सृष्टि (6:15)

अभिवादन, संबोधन और आशीर्वाद 1:1-4

यहाँ पौलुस तुम्हें लिख रहा है। यीशु मसीह का भेजा हुआ। उसका प्रेरित। अपने परमेश्वर और पिता के साथ सहभागिता में उसने मुझे शुभ संदेश, **अपना सुसमाचार,** सौंपा।

किसी मनुष्य ने या मनुष्यों के किसी समूह ने मुझे नहीं भेजा। बल्कि पिता ने, जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया और उसे परमेश्वर के पुत्र और मसीहा के रूप में प्रमाणित किया। उसके द्वारा **अनुग्रह** के युग की घोषणा हुई। मसीह में एक **नई सृष्टि** की नींव रखी गई।

मैं उन सब भाइयों के साथ, जो यहाँ मेरे पास हैं, तुम्हें नमस्कार करता हूँ। उनके साथ मैं उस **एक सुसमाचार** में एक हूँ। मैं गलातिया की सब कलीसियाओं को नमस्कार करता हूँ।

परमेश्वर हमारे पिता और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से **अनुग्रह** और **शान्ति**: वह तुम्हें प्रतिदिन सुरक्षा, देखभाल, सहायता और कुशल दे, तुम जहाँ कहीं भी हो और जो कुछ भी करो!

क्षमा और छुटकारा, क्योंकि परमेश्वर यही चाहता है 1:4-5

हे गलातियो, मैं तुम्हें सबसे ज़रूरी बात सबसे पहले लिखता हूँ, ताकि हम कभी न भूलें कि असल में बात किसकी है; हमारी सुरक्षा किस बात में है और हमारे उद्धारकर्ता के हृदय की इच्छा क्या है: उसने, हमारे प्रभु **यीशु ने, अपने आप को हमारे पापों और भूलों के लिए, हमारे कुकर्मों और अपराधों के लिए दे दिया।** मृत्यु तक। बिना शर्त प्रेम से। एक स्वेच्छा से दिए गए और निष्पाप बलिदान के रूप में। केवल वही, जो निष्पाप था, हमारे पापों का भारी बोझ अपने ऊपर ले सकता था और अपनी क्रूस की मृत्यु के द्वारा उसे सदा के लिए संसार से मिटा सकता था। और उसने यह कर दिखाया! हम अपने पापों और भटकावों को अनकिया नहीं कर सकते थे – चाहे हमने व्यवस्था के कितने ही कर्म और नैतिक या धार्मिक अनुशासन क्यों न निभाया हो। **हमें मसीहा की ज़रूरत थी – और किसी की नहीं!**

इस प्रकार उसने हमें बचाया और इस बुरे संसार से खींचकर बाहर निकाल लिया। हमारे उन पापों को हटाकर, जिनसे हम इस संसार से बँधे और जकड़े हुए थे। वह हमें वहाँ नहीं छोड़ना चाहता था जहाँ लोग बिना सोचे पापों में जीते हैं। उनके दास बने हुए, बिना यह जाने। हमारे छुड़ाने वाले ने हमें **अपने प्रेम के राज्य में एक नई शुरुआत** दी। वह हमें अपने लिए चाहता था। गिरे हुए और परमेश्वर से दूर संसार से उसने हमें छुड़ाया। एक ऐसी संस्कृति और समाज से जो सच्चे और जीवित परमेश्वर को नहीं जानता। जैसे परमेश्वर ने उस समय इस्राएल को मिस्र से छुड़ाया, वैसे ही आज भी उसकी इच्छा सारे संसार को बचाने की है – चाहे हम यहूदियों के वंशज हों या अन्यजातियों के।

यही हमारे परमेश्वर और पिता की इच्छा थी! उसकी अटल और अथाह उद्धार-इच्छा। इसलिए हर संभव रीति से अब और सदा के लिए महिमा और आदर उसी का है! आमीन।

केवल एक ही सुसमाचार है 1:6-10

मैं बिल्कुल चकित हूँ कि तुम इतनी जल्दी यीशु मसीह के ठीक इसी अनुग्रह से फिर गए। ऐसा कुछ अब तक मुझे असंभव लगता था। ठीक उतना ही अप्रत्याशित जितना उस समय इस्राएल। वह महान छुटकारे के बावजूद बहुत थोड़े समय में अपने परमेश्वर से फिर गया। उसने उसकी जगह बस एक सोने का बछड़ा रख दिया, जब मूसा सीनै पर्वत पर था।

तुम भी ऐसे ही हो: यद्यपि पूर्वजों के परमेश्वर ने तुम्हें मसीहा यीशु में अपने महान अनुग्रह के लिए बुलाया, फिर भी अब तुम एक ऐसे सुसमाचार में उलझ गए हो **जो सुसमाचार है ही नहीं**। तुम कुछ लोगों के कारण भ्रम में पड़ रहे हो, जो **मसीह के अनुग्रह के अटल सुसमाचार** को तोड़-मरोड़ रहे हैं।

मैं तुमसे कहता हूँ: चाहे कोई भी तुम्हारे पास आए, चाहे वह स्वर्गदूत ही क्यों न हो, जैसे उस समय सीनै पर्वत पर, चाहे **हम** ही फिर से तुम्हारे पास आएँ और तुम्हें आरंभ से भिन्न कुछ और प्रचार करें – **वह श्रापित हो!** उसका उस बात में कोई भाग नहीं जो यीशु मसीह का सुसमाचार हमें अनुग्रह से देता है। वे अपने बहकाने वाले संदेश के साथ नाश हो जाएँगे। उनका कुछ भी शेष न रहे।

मैं यह कह चुका हूँ और अब फिर कहता हूँ: यदि कोई तुम्हारे पास आकर तुम्हें ऐसा दूसरा सुसमाचार सुनाए, जो उसके विरुद्ध हो जो मैंने तुम्हें सुनाया और तुमने ग्रहण किया: तो वह श्रापित हो! उसके लिए परमेश्वर के न्याय और दंड के सिवा और कुछ नहीं। क्योंकि वे उस सबसे उत्तम चीज़ को नष्ट करते हैं जो परमेश्वर ने हमें दी है। वे लोगों को सीधे विनाश में ले जाते हैं। **अनुग्रह से दूर, व्यवस्थावाद की ओर**।

क्या सुसमाचार पर ऐसे ख़तरे के समय मुझे मनुष्यों को खुश करने के लिए इतनी कड़ी बात नहीं कहनी चाहिए? मुझे तो केवल परमेश्वर को भाना है! यदि मैं मनुष्यों को खुश करने का प्रयास करता, जैसे तुम्हें या इन झूठे संदेशवाहकों को, तो मैं यीशु मसीह का सेवक न होता। कभी नहीं!

प्रिय भाइयो और बहनो, तुम्हें जानना चाहिए कि यह सुसमाचार, जो मैं प्रचार करता हूँ, कोई मानवीय चीज़ नहीं है। ऐसा कुछ नहीं जिसे मनुष्यों ने गढ़ा या सोच निकाला हो। और क्यों? क्योंकि मैंने उसे किसी मनुष्य से नहीं सीखा, न पाया। **मैंने उसे यीशु मसीह, अर्थात् मसीहा, के प्रकाशन के द्वारा पाया है।** सीधे उससे, व्यक्तिगत रूप से।

मेरी कहानी और मेरा मन फिराना: मसीहा को सताने वाले से उसका संदेशवाहक 1:11-16

तुमने निश्चय ही एक यहूदी और फरीसी के रूप में मेरे जीवन के बारे में सुना है। मैंने परमेश्वर की कलीसिया को, उसके पवित्र लोगों को, हद से ज़्यादा सताया और नष्ट किया। उन पर हमला करने और उन्हें नष्ट करने में मैंने कोई कसर नहीं छोड़ी। वैसे भी यहूदी धर्म में मैंने बड़ी उन्नति की थी। मुझे अपने हमउम्र लोगों से कहीं अधिक मान्यता और समर्थन मिला। मेरा नाम हर जगह जाना-माना था। मेरी ख्याति एक जोशीले की थी, एक ज़ेलोत की, जो पूर्वजों की परंपराओं को अत्यंत बारीकी से मानता था। चाहे कुछ भी कीमत चुकानी पड़े। मैं एक जोशीला था, जैसे उस समय एलीआज़ार का पुत्र, याजक पीनहास, जिसने इस्राएली व्यभिचारी और मिद्यानी स्त्री को सबके सामने मार डाला। ऐसा गिनती 25 में लिखा है।

पर परमेश्वर ने मुझे मेरे जोश के चरम पर रोक दिया। दमिश्क के मार्ग पर। वहाँ भी मैं मसीहियों की सभाओं को नष्ट करना चाहता था। मैं इसका कारण केवल यही बता सकता हूँ कि परमेश्वर ने मुझे गर्भ में पड़ने के समय से ही अपनी दृष्टि में रखा था और मुझे सुसमाचार की सेवा के लिए ठहराया था। अनुग्रह से। पूरी तरह बिना योग्यता के। परमेश्वर ने मुझे इस तरह रोका कि उसने अपने पुत्र, मसीहा, को मुझ में प्रकट किया। मेरी भीतरी आँखों के सामने। मेरे हृदय और मन में अचानक उसका पुत्र, मसीहा, प्रकट हुआ। वह मेरे सामने खड़ा था, सबसे तेज़ प्रकाश में। उसने मुझसे बात की। उसके शब्दों ने एक ही झटके में मेरी शत्रुता को, और परमेश्वर की कलीसिया को सताने के मेरे जोश को, समाप्त कर दिया। **मुझे ठीक इसके उलटा बनना था: उसके सुसमाचार का संदेशवाहक। और वह भी अन्यजातियों के लिए – goyim के लिए, लोगों के लिए, ग़ैर-यहूदियों और मूर्तिपूजकों के लिए।**

पौलुस का सुसमाचार यरूशलेम से नहीं, बल्कि सीधे स्वर्ग से, मसीहा की ओर से है 1:17-24

इस झकझोर देने वाले अनुभव के बाद मैंने क्या किया? मैंने ठीक वह नहीं किया जो स्वाभाविक रूप से किया जाता या जिसकी अपेक्षा होती। अर्थात् **यरूशलेम** जाना। प्रेरितों और आदि कलीसिया के पास, ताकि वहाँ अपनी बात समझाऊँ और अगले कदमों के लिए निर्देश पाऊँ।

मैं दमिश्क से तुरंत **अरब** चला गया। जैसे कभी एलिय्याह, जो कर्मेल पर्वत पर अपनी बड़ी विजय के बाद डरकर ईज़ेबेल से भागा। बहुत दूर, होरेब पर्वत तक, ताकि वहाँ परमेश्वर से मिले। मैंने उसकी उपस्थिति खोजी – एकांत और शांति में। मेरे अंतर्मन को साफ़ किया जाना, नया रूप दिया जाना और नया बनाया जाना आवश्यक था। क्योंकि उस पागल जोश ने मुझे इतना कठोर बना दिया था कि स्वयं परमेश्वर को मुझे बदलना और चंगा करना पड़ा। मसीह की महिमा का सुसमाचार और अनुग्रह की पहुँच वहाँ मुझ पर अपने सब महिमामय विवरणों के साथ प्रकट की गई। मैंने मसीह को ऐसे पाया जैसे मैं उसे अब तक नहीं जानता था! पवित्रशास्त्र और तोराह उसके विषय में भविष्यद्वाणी करते हैं और उसकी गवाही देते हैं। इसी मसीह का प्रचार मैंने अरब में भी किया।

वहाँ से मैं **दमिश्क** लौट गया, जहाँ परमेश्वर ने मसीहा से मुलाक़ात के बाद मेरी आँखें खोली थीं और मेरा अंधापन चंगा किया था। उसके बाद ही, मन फिराने के तीन वर्ष बाद, मैं पहली बार **यरूशलेम** गया। मैं **पतरस** से मिलना चाहता था, प्रेरितों में पहले से। मैं 15 दिनों तक उसे जान सका। हम लगातार बातें करते रहे। तब तक मेरे पास मसीहा के बारे में हज़ारों प्रश्न थे, जिसे पतरस तो बहुत निकट से जानता था। बारह प्रेरितों में से मैं किसी और से नहीं मिला। पर मैं एक और व्यक्ति से मिला, जो मसीहा को पतरस से भी पहले से जानता था, अर्थात् याकूब, उसका भाई। वह, यद्यपि बारहों की तरह प्रेरित नहीं था, यरूशलेम की चेलों की कलीसिया का एक अगुवा था।

जो कुछ मैं तुम्हें लिख रहा हूँ, वह सत्य है!

उसके बाद, जब मैंने यरूशलेम छोड़ा, मैं **सीरिया और किलिकिया के क्षेत्रों में आया। अपने पुराने घर में।**

यहूदिया के चुने हुए लोगों, मसीह में पवित्र लोगों, से मेरी व्यक्तिगत पहचान नहीं थी। यरूशलेम में मेरा ठहरना बहुत छोटा था। उन्होंने केवल इतना सुना था: हमारा पूर्व सताने वाला और यातना देने वाला अब मसीहा यीशु पर विश्वास का प्रचार और प्रसार करता है। इसी विश्वास को वह कभी हमारे साथ मिटा देना चाहता था। इस पर उन्होंने परमेश्वर की स्तुति की, जिसने मुझ में मन फिराने और नई सृष्टि का ऐसा चमत्कार किया था।

दूसरी बार यरूशलेम में, पतरस, याकूब और यूहन्ना के पास 2:1-10

14 वर्ष बाद ही मैं दूसरी बार **यरूशलेम** गया। **बरनबास** के साथ। युवा **तीतुस** को हम साथ ले गए, जो हमारा एक विश्वासयोग्य सहायक था। यरूशलेम जाने का विचार मेरा नहीं था। मुझ पर ऊपर से प्रकट किया गया कि मुझे जाना चाहिए।

वहाँ मैंने उनके सामने वह **सुसमाचार** रखा, जो मैंने मसीह से पाया था, ताकि उसे यहूदियों और अन्यजातियों को सुनाऊँ। यह मैंने विशेष रूप से प्रतिष्ठित लोगों के सामने किया, यरूशलेम की कलीसिया के अगुवों के सामने, ताकि मेरा आना व्यर्थ न जाए।

तीतुस, जो जन्म से यूनानी और ख़तनारहित था, उसे यरूशलेम में भी **ख़तने** के लिए विवश नहीं किया गया। न प्रेरितों ने, न याकूब ने।

पर कुछ लोग थे जिन्होंने यह प्रयास किया। भाइयों की भीड़ में **प्रेरितों की सभा के अवसर पर नक़ली भाई चुपके से घुस आए थे।** झूठे भाई, जिनके मन में बस एक ही बात थी: वे हमारी स्वतंत्रता की, ख़तना न करवाने की, जासूसी करना चाहते थे। वे हमारी घात में थे, ताकि पता लगाएँ कि तीतुस का ख़तना हुआ है या नहीं, और फिर उसे इसके लिए विवश करें। इस तरह वे भक्ति की अपनी झूठी धारणा के अनुसार हमें व्यवस्था के जूए और बोझ के नीचे लाना चाहते थे।

जब उन्होंने आख़िरकार पता लगा लिया कि तीतुस का ख़तना नहीं हुआ है, तो उन्होंने इसकी माँग की। जैसी अपेक्षा थी। पर हमने उनकी माँग का दृढ़ता से विरोध किया और उसे ठुकरा दिया। क्योंकि **बात सत्य की है, सुसमाचार के मर्म की।** उसकी हमने रक्षा की। गलातिया में तुम्हारे लिए भी। सुसमाचार ख़तने और व्यवस्था के पालन की माँग नहीं करता।

इकट्ठे हुए अगुवों ने, अर्थात् उन तथाकथित प्रतिष्ठित लोगों ने, जिनके सामने मैंने अपना सुसमाचार रखा था, मुझ पर कोई और माँग नहीं डाली। और यह तो बिल्कुल नहीं कि मुझे ख़तने का पालन करना और उसकी शिक्षा देनी चाहिए।

क्योंकि उन्होंने पहचान लिया कि अन्यजातियों के लिए, ख़तनारहितों के लिए, सुसमाचार मुझे सौंपा गया था। और ठीक उसी रीति से, जैसे पतरस को यहूदियों के लिए, ख़तना किए हुओं के लिए, सुसमाचार सुनाने को बुलाया गया था। क्योंकि वही परमेश्वर, जिसने पतरस के द्वारा यहूदियों के बीच, यहूदिया में, काम किया, वैसे ही मेरे द्वारा अन्यजातियों के बीच काम करता था।

जब प्रभु के भाई याकूब ने और दोनों प्रेरितों पतरस और यूहन्ना ने वह अनुग्रह देखा जो मुझे दिया गया था, तब उन्होंने मुझे **सहभागिता का दाहिना हाथ** दिया। हाथ मिलाकर उन्होंने मेरी और बरनबास की इस

बात की पुष्टि की कि अन्यजातियों के बीच सेवा हमारी बुलाहट है। जैसे वे यहूदियों की सेवा करते हैं। **यरूशलेम के अगुवों ने मेरी सेवा और मेरे प्रेरित-पद को मान्यता दी**। इसलिए उन्होंने यह माँग नहीं की कि हम ख़तनारहितों पर ख़तने का दबाव डालें। उनकी एकमात्र माँग यह थी कि हम ग़रीबों को न भूलें। और कुछ नहीं। और इसका हमने निश्चय ही ख़ुशी से पालन किया।

अन्ताकिया में पतरस पौलुस के साथ – एक साथ भोजन की संगति का टूटना सुसमाचार के हृदय को नष्ट करता है 2:11-14

कुछ समय बाद कैफा, अर्थात् प्रेरित **पतरस**, अन्ताकिया आया, जहाँ बरनबास और मैं ठहरे हुए थे। वहाँ एक **बड़ा टकराव** हुआ। क्योंकि मैंने सबके सामने और दृढ़ता से उसका विरोध किया। अपने व्यवहार से उसने स्वयं को दोषी ठहरा लिया था। यह हुआ था: हम कई भाइयों और बहनों के साथ मिलकर भोजन कर रहे थे। पतरस भी साथ था। जब प्रभु के भाई याकूब की ओर से यरूशलेम से कुछ लोग आए, तो वह अचानक उस भोजन की संगति से अलग हो गया, जो हम अन्यजातियों में से आए मसीहियों के साथ रखते थे। क्योंकि वह ख़तना किए हुए उन आने वाले भाइयों से डरता था, जो व्यवस्था और परंपरा के कारणों से ख़तनारहितों के साथ भोजन की संगति को अस्वीकार करते थे। अचानक दूसरे यहूदी भी भोजन की संगति से उठकर उसके पीछे चल दिए और उसके साथ हो गए। यहाँ तक कि मेरा सबसे निकट का विश्वासपात्र और संगी योद्धा बरनबास, एक लेवी, भी मेरी निराशा के लिए इस कपट में बह गया। उन्होंने ऐसा दिखाया मानो अन्यजातियों में से आए मसीहियों के साथ उनकी कोई भोजन की संगति न हो। ख़तना किए हुए यहूदी मनुष्यों के भय से अन्यजातियों में से आए ख़तनारहित भाइयों से अलग हो गए और **इस प्रकार सुसमाचार के सत्य का इनकार किया**। अर्थात् इस सत्य का कि **परमेश्वर अन्यजातियों को अपनी प्रजा के रूप में स्वीकार करता है,** बिना ख़तने के, बिना मूसा की व्यवस्था के और बिना यहूदी परंपराओं के। जब मैंने देखा कि वे सुसमाचार के सत्य के अनुसार नहीं चल रहे थे, तो मैंने पतरस का आमने-सामने सामना किया और इस कलंक की बात सबके सामने उठाई। आख़िर हमने यह प्रश्न, कि क्या अन्यजातियों में से आए चेलों को मूसा की व्यवस्था माननी होगी, अभी-अभी यरूशलेम में सदा के लिए सुलझा लिया था। नहीं, अन्यजातियों को व्यवस्था नहीं माननी थी। सब उपस्थित लोगों के सामने मैंने उससे कहा: तू यहूदी है और अन्यजातियों की तरह जीता है, क्योंकि तू यहाँ उनके साथ भोजन की संगति रखता है। अब, जब तू उनसे अलग होकर अपने यहूदी विश्वासी भाइयों के साथ हो गया है, तो तू अन्यजातियों को यहूदी परंपराओं के अनुसार जीने के लिए विवश करता है। **उन्हें तेरे व्यवहार का यही अर्थ समझना पड़ेगा कि परमेश्वर की प्रजा में शामिल होने के लिए यहूदी रीति से जीना ज़रूरी है।** यह अन्यजातियों में से आए मसीहियों के लिए तेरा बिना शब्दों का संदेश है। तेरा व्यवहार एक संकेत बन जाता है! एक गलत संकेत।

धर्मी ठहराया जाना सबके लिए केवल मसीह पर विश्वास से आता है 2:15-18

हम, पतरस, पौलुस, इस्राएल, जन्म से यहूदी हैं और इस प्रकार परमेश्वर की चुनी हुई प्रजा। हम अन्यजातियों जैसे पापी नहीं, जो बिना व्यवस्था के, बिना परमेश्वर के चुनाव के हैं। पर आख़िरकार इससे हमें कुछ भी लाभ नहीं होता। सुसमाचार कुछ और कहता है। हम तो जानते हैं कि मनुष्य व्यवस्था के कर्मों या यहूदी जीवन-शैली के आधार पर परमेश्वर के द्वारा धर्मी घोषित नहीं किया जाता। यह केवल और केवल यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा होता है। हमने भी अन्यजातियों की तरह मसीहा पर विश्वास किया, ताकि हम इसी विश्वास के द्वारा – न कि ख़तने जैसे व्यवस्था के कर्मों के द्वारा – धर्मी ठहराए जाएँ। केवल इसी तरह हम परमेश्वर की प्रजा में शामिल हैं। **सुसमाचार स्पष्ट और समझौता-रहित है: मूसा की व्यवस्था का पालन करके, अर्थात् व्यवस्था के कर्मों से, पूरी पृथ्वी पर कोई भी मनुष्य कभी धर्मी नहीं ठहराया जा सकेगा। या परमेश्वर से उसका मेल नहीं कराया जा सकेगा।** यहूदी या फरीसी भक्ति के आधार पर भी नहीं। परमेश्वर के साथ हमारा संबंध, उसके साथ हमारा जुड़ाव, केवल विश्वास के द्वारा ठीक किया और स्थापित किया जाता है।

यदि हम यहूदी मसीह में धर्मी ठहराए जाने के लिए सब कुछ लगा देते हैं, तो स्पष्ट है कि हम बेहतर नहीं हैं। ख़तना किए हुए होकर भी, और उन लोगों के रूप में भी जिनके पास व्यवस्था है। तो यदि हम व्यवस्था के बिना धर्मी ठहराए जाते हैं, तो क्या व्यवस्था हमारे लिए बेमानी हो जाती है? या तब भले और बुरे का कोई महत्त्व नहीं रहता? बिल्कुल नहीं! कदापि नहीं।

मैंने व्यवस्था और उसकी माँगों को छोड़ दिया है, हाँ, व्यवस्था की पूरी प्रणाली को ढा दिया है। मैं अभी समझाता हूँ कि यह कैसे हुआ। पर यदि मैं अब उसे फिर से खड़ा करूँ (जैसा अन्ताकिया में हुआ, जब यरूशलेम से भाई आए और यहूदी मसीही दूसरे मसीहियों से अलग हो गए), तो मैं अपराधी ठहरूँगा। मैं मसीह की व्यवस्था और उसके सुसमाचार की अवहेलना करूँगा।

सुसमाचार: परमेश्वर का अनुग्रह, मसीह का प्रेम, उसका क्रूस और विश्वास 2:19-21

मैं, यहूदी पौलुस, व्यवस्था की न्यायपूर्ण माँग के द्वारा "मर" गया हूँ। व्यवस्था ने मानो मुझे मृत्यु में धकेल दिया। उसने मेरी मृत्यु की माँग की, क्योंकि मैं व्यवस्था का उल्लंघन करने वाला हूँ। मैं उसे पूरा नहीं कर सकता। पूरी तरह तो बिल्कुल नहीं। इसलिए "मैं मर गया"। मैं मानो व्यवस्था के लिए, उसकी माँगों के लिए और उसके न्यायपूर्ण तथा दोषी ठहराने वाले श्राप के लिए मर गया हूँ। पर एक चमत्कार, एक अदला-बदली हुई है: अब मैं परमेश्वर के लिए जीता हूँ! मैं स्वतंत्र हूँ, परमेश्वर के लिए जीने और उसकी आज्ञा मानने के लिए। यह कैसे हो सकता है? इसे कैसे समझाया जाए, जबकि मैं अभी जीवित हूँ और यह पत्री लिख रहा हूँ? कारण यह है: **मैं मसीह के साथ "क्रूस पर चढ़ाया गया" हूँ**। अर्थात् उसकी मृत्यु में मसीह के साथ आत्मिक रूप से एक हो गया हूँ: क्रूस पर उसकी मृत्यु मेरी मृत्यु है। मसीह के क्रूस पर अपराधी और पापी के रूप में मेरा पुराना, बिना छुटकारे का जीवन समाप्त कर दिया गया। मेरे लिए **उसकी मृत्यु में**। यह परमेश्वर ने संभव किया। उसने यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान को मानो मेरे नाम ऐसे कर दिया, मानो वह सचमुच मेरा अपना क्रूस पर चढ़ाया जाना **और** पुनरुत्थान रहा हो।

अब मैं परमेश्वर के लिए जीता हूँ – पर पुराने शाऊल के रूप में नहीं – यह मसीह है, जी उठा हुआ, जो मुझ में जीता है! **वही मेरा नया अस्तित्व है।** वही मेरे नए होने को निर्धारित करता है। वही दोषमुक्त और धर्मी ठहराए गए व्यक्ति के रूप में मेरे जीवन की शक्ति है।

अपने दुर्बल, टूटे-फूटे और नश्वर शरीर में मैं अपना अस्तित्व विश्वास में जीता हूँ। परमेश्वर के पुत्र पर दृढ़ भरोसे में। केवल वही मेरे भरोसे के योग्य है। **केवल उसी पर मैं अपना जीवन टिकाता हूँ, क्योंकि उसने मुझसे प्रेम किया। केवल उसी ने मुझसे इतना बिना शर्त प्रेम किया और अपने आप को मेरे लिए, मेरे भले के लिए और मेरे स्थान पर, मृत्यु तक दे दिया।** ज़रा सोचो, तुमसे और मुझसे, हम सबसे, उसने अपने जीवन की कीमत पर बिना शर्त प्रेम किया। हाँ, वह हमारे कारण मरा – और हमारे लिए।

मैं परमेश्वर के उस अनुग्रह को व्यर्थ नहीं ठहराऊँगा, जिसे हम पुरानी वाचा में और व्यवस्था में भी पहचानते हैं। पर यदि वह धार्मिकता, जो परमेश्वर के सामने मान्य है, जो हमें बचाती है और नया जीवन देती है, व्यवस्था के कर्मों के द्वारा संभव होती, तो मसीह व्यर्थ मरा। क्रूस पर उसकी भयानक मृत्यु व्यर्थ होती। तब कोई सुसमाचार न होता। **इसलिए मसीह में परमेश्वर का अनुग्रह ही परमेश्वर की इच्छा के योग्य बनने का हमारा एकमात्र अवसर है। यहाँ व्यवस्था अपनी असमर्थता प्रकट करती है: वह छुटकारा नहीं दे सकती! वह छुटकारा पाने में हमारी सहायता तक नहीं कर सकती।**

परमेश्वर ग़ैर-यहूदी गलातियों (गॉल लोगों) को क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह में अपने आप को देता है – व्यवस्था में नहीं 3:1-5

हे भोले गलातियो, तुम तो मानो सम्मोहित हो गए हो। मानो तुम अब स्वयं नहीं रहे! मैं तो तुम्हारे पास यीशु, उद्धारकर्ता, को लाया था। **मैंने उसे क्रूस पर चढ़ाए गए के रूप में तुम्हारी आँखों के सामने चित्रित किया – उसे, जो हमारे लिए मरा। अपने बलिदान के द्वारा उसने सब कुछ ठीक कर दिया और हमारे पाप को ढाँप दिया।** इससे बेहतर मैं तुम्हारे पास कुछ नहीं ला सकता था। इतने अनुग्रह से परमेश्वर तुमसे मिला। और तुमने उसे कृतज्ञता से विश्वास में ग्रहण किया।

इसलिए मैं तुमसे एक बात जानना चाहता हूँ: तुम्हें परमेश्वर का आत्मा किस कारण मिला? याद करो! क्या तुम्हारे अच्छे कामों और व्यवस्था के प्रति निष्ठा के कारण? या इसलिए कि तुमने उस पर विश्वास किया जो मैंने तुम्हें सुनाया? इतने भोले मत बनो। **तुमने पवित्र आत्मा के द्वारा विश्वास में यीशु के पीछे चलना शुरू किया। और अब तुम अपनी शक्ति और व्यवस्था-निष्ठा से आगे बढ़कर लक्ष्य तक पहुँचना चाहते हो?** क्या तुम सचमुच शारीरिक बातों में, धार्मिक दिखावे के बाहरी रूपों में, वापस गिरना चाहते हो? क्या तुमने विश्वास का महान वरदान और मसीहा का ज्ञान व्यर्थ ही अनुभव किया? मैं तो कल्पना भी नहीं करना चाहता कि सब कुछ, सुसमाचार के कारण तुम्हारे दुःख भी, व्यर्थ गए। यदि तुम अब व्यवस्था और ख़तने के साथ आगे बढ़ो, तो ऐसा ही होगा।

परमेश्वर ही है जो तुम्हें सब कुछ देता है! जो तुम्हें अपना आत्मा देता है और तुम्हारे बीच सामर्थ्य के काम करता है। वही है जो तुम्हारे जीवन में, परिवारों में और कलीसियाओं में आशीष भरे परिवर्तन लाता है। तुम्हारे विचार में इसका कारण क्या है? क्या तुम्हारी प्रभावशाली भक्ति? क्योंकि तुम व्यवस्था मानते हो? अपना ख़तना करवाते हो? तुम तो यहूदी थे ही नहीं! और जब तुमने सुसमाचार पर विश्वास किया, तब तुम्हारा व्यवस्था से कोई लेना-देना नहीं था! **केवल सुसमाचार पर, क्रूस पर चढ़ाए गए और जी उठे मसीह पर तुम्हारे विश्वास ने सब कुछ बदल दिया। इसी के द्वारा तुम्हें क्षमा, शान्ति और जीवन मिला। तुम में बसे पवित्र आत्मा के द्वारा।** यह बात अब तो बदली नहीं है। तुम्हारा व्यवस्थावाद तुम्हारे लिए परमेश्वर की आशीष नहीं कमा सकता और इस ज्ञान को नष्ट कर देता है! सब कुछ तुम्हारे विश्वास के आधार पर परमेश्वर का अनुग्रह-दान ही बना रहता है।

अब्राहम विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया गया – और हम उसके बेटे और बेटियाँ हैं, केवल विश्वास के द्वारा 3:6-9

तुम्हारी ही तरह अब्राहम ने भी परमेश्वर पर विश्वास किया। बहुत समय पहले। वह अन्यजातियों में से आया था – तुम्हारी तरह। वह इस्राएल और यहूदियों का कुलपिता है। परमेश्वर ने उसे उसके विश्वास के आधार पर धर्मी ठहराया। बिना व्यवस्था के! क्योंकि तब तक वह थी ही नहीं। बिना ख़तने के। क्योंकि वह बाद में आया। विश्वास ही गिना गया। अब्राहम के विषय में परमेश्वर का निर्णय यह है: अब्राहम धर्मी है, वह मेरे साथ सही संबंध में है, क्योंकि वह मुझ पर बिना शर्त भरोसा करता है। जैसे तुम्हारे हृदय बदले गए, वैसा ही अब्राहम ने भी अनुभव किया। उस समय ठीक-ठीक बात क्या थी? अब्राहम निराश था कि बुढ़ापे में भी उसकी कोई सन्तान नहीं थी। पवित्रशास्त्र उत्पत्ति 15 में बताता है:

“इन घटनाओं के बाद यहोवा का वचन एक दर्शन में अब्राम के पास पहुँचा: हे अब्राम, मत डर, मैं स्वयं तेरी ढाल हूँ; तेरा प्रतिफल बहुत बड़ा होगा। 2 अब्राम ने उत्तर दिया: हे प्रभु यहोवा, तू मुझे क्या दे सकता है? मैं निःसन्तान ही चला जा रहा हूँ, और मेरे घर का वारिस दमिश्क का एलीएज़ेर है। 3 और अब्राम ने कहा: देख, तूने मुझे कोई सन्तान नहीं दी; इसलिए मेरा घरेलू दास मेरा वारिस होगा। 4 पर देखो, यहोवा का वचन उसके पास पहुँचा: वह तेरा वारिस नहीं होगा, **बल्कि तेरा अपना पुत्र तेरा वारिस होगा**। 5 उसने उसे बाहर ले जाकर कहा: आकाश की ओर देख और तारों को गिन, यदि तू उन्हें गिन सके! और उसने उससे कहा: **तेरी सन्तान इतनी ही असंख्य होगी।** 6 **और उसने यहोवा पर विश्वास किया, और यहोवा ने इसे उसके लिए धार्मिकता गिना।**”

उसने परमेश्वर पर बिना शर्त भरोसा किया। उसने इतिहास में परमेश्वर के काम करने को जगह दी और हर तर्क और मानवीय अपेक्षा के विरुद्ध एक मूल भरोसे के साथ अपने आप को परमेश्वर की बाँहों में छोड़ दिया। ऐसे विश्वास करना ही मापदंड और आदर्श है। इससे तुम पहचान सकते हो: **जो सब उसकी तरह विश्वास करते हैं, वे अब्राहम के बेटे और बेटियाँ हैं।**

परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र में अब्राहम से पहले ही कह दिया था कि एक दिन अन्यजातियाँ विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराई जाएँगी। क्योंकि उसने उससे कहा: **तुझ में सब जातियाँ आशीष पाएँगी।**

इसलिए जितने अब्राहम की तरह विश्वास करते हैं, वे सब आशीष पाएँगे। तब तुम अब्राहम की असंख्य सन्तानों में शामिल हो।

व्यवस्था श्राप लाती है, विश्वास दोषमुक्ति – मसीह क्रूस पर श्राप उठाता है 3:10-14

इसके विपरीत यह है: जितने व्यवस्था की ओर मुड़ते हैं, जितने व्यवस्था से धर्मी बनना चाहते हैं, वे सब **व्यवस्था के श्राप** के अधीन हो जाते हैं। क्योंकि परमेश्वर के वचन स्पष्ट हैं: जो कोई उन **सब बातों** में बना नहीं रहता जो व्यवस्था में लिखी हैं, और वह नहीं करता जिसकी वह माँग करती है, वह श्रापित है। व्यवस्था की हर एक आज्ञा का पालन करना होगा। कोई बस एक आज्ञा चुनकर अलग नहीं कर सकता।

व्यवस्था के आधार पर, अर्थात् व्यवस्था के कर्मों के आधार पर, कोई धर्मी घोषित नहीं किया जाता। न तब, न आज! पवित्रशास्त्र कहता है – यद्यपि पुराना नियम अपनी व्यवस्था के साथ बहुत पहले से था –: **धर्मी जन मुझ पर विश्वास से जीवित रहेगा**। मसीह पर अटल भरोसा और मसीह के प्रति विश्वासयोग्यता का अर्थ है कि मसीह मेरा जीवन है। जो विश्वास से धर्मी है, वह जीवित रहेगा! **विश्वास में जीना!**

व्यवस्था का सिद्धांत विश्वास नहीं है और न रहेगा, बल्कि करना, धार्मिक उपलब्धि। कहा गया है, जो ये बातें करेगा, वह जीवित रहेगा। **व्यवस्था वाले मनुष्य को करके दिखाना पड़ता है, उसे कुछ भी मुफ़्त नहीं मिलता।** व्यवस्था कोई अनुग्रह नहीं जानती। जो व्यवस्था में उलझता है, वह उसे पूरी तरह पूरा करने के लिए बाध्य है! कोई समझौता नहीं, कोई मिलावट नहीं, कोई बीच का रास्ता नहीं। व्यवस्था और मसीह पर विश्वास एक साथ मेल नहीं खाते।

विश्वास वाले मनुष्य के लिए यह सत्य है: हमें तो मसीह ने अपनी क्रूस की मृत्यु के द्वारा टूटी हुई व्यवस्था के मृत्यु-श्राप से छुड़ाया है। हमने उसका उल्लंघन किया है और उसे 100 % तो क्या, उसके आस-पास भी पूरा नहीं किया। हम केवल एक सिफ़ारिश करने वाले के द्वारा, एक मध्यस्थ या वकील के द्वारा, स्वतंत्र हो सकते हैं और जीवित रह सकते हैं। एक धर्मी के द्वारा, जो हमारे लिए खड़ा होता है, जो वह अपने ऊपर ले लेता है जिसके हम योग्य थे। और यीशु ने वह किया जो समझ से परे है: **वह हमारे लिए श्राप बना!** क्योंकि पवित्रशास्त्र व्यवस्थाविवरण 21:23 में कहता है: जो कोई काठ पर लटकाया जाता है, वह श्रापित है। क्रूस के काठ पर मरता हुआ मसीहा, निर्दोष और धर्मी, हमारे स्थान पर मृत्यु का श्राप बना। बुरे मनुष्यों के द्वारा क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला गया। इसलिए हम उसके जीवन की कीमत से मोल लेकर छुड़ाए गए हैं! यह सबके लिए है – यहूदियों और अन्यजातियों के लिए, जो व्यवस्था के द्वारा परमेश्वर के सामने धर्मी बनने का प्रयास करते हैं। तुम गलाती भी, जिन्होंने अपना ख़तना करवा लिया है, मसीह के द्वारा श्राप से छुड़ाए गए हो।

श्राप से, जिसके हम योग्य थे, यह अनोखा छुटकारा अब्राहम की प्रतिज्ञा का मार्ग खोल देता है: क्रूस पर चढ़ाए गए, जिलाए गए और ऊँचे पर उठाए गए मसीहा यीशु के द्वारा वह आशीष, जिसकी प्रतिज्ञा अब्राहम

से की गई थी, अब सब जातियों के लिए ठोस वास्तविकता बन जाती है। मसीह में वह सब लोगों तक पहुँचती है। ताकि हम सब, यहूदी और अन्यजातियाँ, **प्रतिज्ञा** पाएँ: **पवित्र आत्मा**। ऐसा ही भविष्यद्वक्ताओं यशायाह, यहेजकेल, योएल और जकर्याह ने पहले से कहा था। नए जीवन का आत्मा। सामर्थ्य का आत्मा। और स्वतंत्रता का आत्मा, जो परमेश्वर के नए संसार में बहता है – नई सृष्टि की श्वास।

परमेश्वर का वचन-दान बना रहता है और मूसा की व्यवस्था से बढ़कर है, जो प्रतिज्ञाओं को रद्द नहीं करती 3:15-18

भाइयो और बहनो, मैं तो ऐसे बोल रहा हूँ कि उसे स्पष्ट रूप से समझा जा सके: यदि किसी ने कोई वसीयत या वाचा बनाई है, जो क़ानूनी रूप से लागू हो चुकी है, तो कोई भी चीज़ उसे अमान्य घोषित नहीं कर सकती। एक अतिरिक्त धारा भी उसकी क़ानूनी शक्ति को नहीं बदल सकती।

अब्राहम को परमेश्वर से प्रतिज्ञा मिली। उसके वंश के लिए यह एक मान्य और अचुनौतीय वसीयत जैसी थी। इसमें मेरे लिए यह बताना महत्त्वपूर्ण है कि प्रतिज्ञा, ठीक-ठीक कहें तो, बहुत-सी सन्तानों से नहीं की गई थी, अर्थात् केवल अब्राहम के सीधे वंशजों और निकट रक्त-संबंधियों से नहीं, जिनमें तुम गलाती शा- मिल नहीं हो। नहीं, केवल एक वंशज से, एक ही बीज से। एक व्यक्ति से। और जानते हो वह कौन है? **वह मसीह है**। क्योंकि इसहाक में तो सारी प्रतिज्ञाएँ पूरी होने से बहुत दूर थीं।

इससे मैं तुमसे यह कहना चाहता हूँ: एक वसीयत, जो परमेश्वर ने अब्राहम के लिए बनाई, 430 वर्ष बाद आई मूसा की व्यवस्था के द्वारा रद्द नहीं होती। नहीं, प्रतिज्ञा, सब जातियों के लिए आशीष का परमेश्वर का वचन-दान और वादा, बनी रहती है। यदि यह मीरास, जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अब्राहम से की, व्यवस्था से आती, तो वह प्रतिज्ञा न रहती। फिर से कहता हूँ: परमेश्वर ने उसे अब्राहम को प्रतिज्ञा के द्वारा दिया। यह केवल उससे परमेश्वर का वचन-दान है।

व्यवस्था का अर्थ, उसका लक्ष्य और उसका अंत 3:19-24

अब ठीक ही प्रश्न उठता है कि तब व्यवस्था का क्या महत्त्व रह जाता है। वह क्यों दी गई? तोराह का क्या लाभ है? तोराह परमेश्वर की प्रजा के लिए अवर्णनीय आशीष है। क्योंकि वह दिखाती है **कि परमेश्वर कैसा है।** विशेषकर यह भी कि वह क्या भलाई करना चाहता है, ताकि अपनी प्रजा को उन दूसरी जातियों की भूलों से बचाए जो परमेश्वर को नहीं जानतीं। तोराह **उसकी प्रजा के लिए एक रक्षा-कवच** थी। क्योंकि उसकी प्रजा के आचरण को नियमों की आवश्यकता थी – और दंड-व्यवस्था की। तोराह आज्ञाओं के उल्लंघन को पहचानने योग्य बनाती है। वह चेतावनी देती है। और उल्लंघनों को दंडित करती है। वह यह भी खुलकर दिखाती है, यदि कोई देखना चाहे, कि हम सब परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन करने वाले हैं। हम परमेश्वर की आज्ञाओं को कभी पूरी तरह नहीं मान सकते।

पर वह केवल एक सीमित समय के लिए दी गई थी – जब तक **वह वंशज** संसार में न आए, जिसके लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा ठहराई गई थी।

व्यवस्था, अर्थात् तोराह, इस्राएल की प्रजा को स्वर्गदूतों के आदेश पर दी गई। मूसा के द्वारा पहुँचाई गई। पर प्रतिज्ञा बिल्कुल अलग है। अब्राहम ने उसे सीधे परमेश्वर से पाया। जैसे मैंने अपना प्रेरित-पद और अपना सुसमाचार सीधे परमेश्वर से पाया। बिना मध्यस्थ के। एक सच्चे परमेश्वर ने स्वयं अब्राहम को उस बात का भरोसा दिलाया, जो अब मसीह में पूरी हो गई है।

तो क्या इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि व्यवस्था किसी तरह प्रतिज्ञा से होड़ करती है? नहीं, कदापि नहीं। और यदि करती भी, तो केवल इसी शर्त पर: यदि कोई ऐसी व्यवस्था होती जो सचमुच जीवन दे सकती, तो धार्मिकता व्यवस्था के पालन से आती। तब – केवल तब – व्यवस्था जीवन का एक मार्ग और परमेश्वर की बिना शर्त प्रतिज्ञा का विकल्प होती।

पर पवित्रशास्त्र में क्या दिखाई देता है? कि सब, यहूदी और अन्यजातियाँ, वह नहीं करते जिसकी व्यवस्था माँग करती है। वे उल्लंघन करने वालों के रूप में उजागर होते हैं, जो पाप की शक्ति के हवाले हैं। पापमयता व्यवस्था के द्वारा निःसंदेह प्रकाश में लाई गई। इससे सब पर स्पष्ट हो जाता है कि उन्हें प्रतिज्ञा की नितांत आवश्यकता है। और वे उसे सचमुच पा सकते हैं: अर्थात् यीशु मसीह पर विश्वास। **केवल विश्वास करने वालों को ही वह प्राचीन प्रतिज्ञा दी जाती है!**

इससे पहले कि मसीह पर यह विश्वास संभव होता, हम मानो व्यवस्था की पाठशाला में थे। व्यवस्था की निगरानी और सुरक्षा में। इस लक्ष्य के साथ कि एक दिन विश्वास कर सकें। तब, जब यह विश्वास प्रकट होगा। विश्वास का मार्ग तब आख़िरकार व्यवस्था के अधीन हमारी क़ैद और पहरेदारी को समाप्त कर देगा। व्यवस्था मानो हमारी संरक्षक बन गई: एक ओर उसने हमारी रक्षा की। दूसरी ओर वह यह भी दिखाती है कि

हमें मसीह की कितनी आवश्यकता है – उस छुड़ाने वाले की, जो विश्वास के द्वारा हमें धर्मी बनाता है और परमेश्वर से मेल-मिलाप का संबंध देता है।

छुड़ाने वाला हमें विश्वास के द्वारा परमेश्वर के पुत्र बनाता है और सबको बिना भेदभाव मसीह में एक करता है 3:25-29

और परमेश्वर का धन्यवाद हो, ऐसा ही हुआ। जब मसीहा पर विश्वास आया और वह हमारे जीवन में आया, तब हमने संरक्षक को पीछे छोड़ दिया। व्यवस्था के अधीन समय बीत गया। उद्देश्य तो पूरा हो चुका है। तुम सब अब नाबालिग और संरक्षक के अधीन विद्यार्थी नहीं रहे। नहीं! **अब तुम विश्वास के द्वारा परमेश्वर के परिपक्व और वयस्क बेटे और बेटियाँ हो!** तुम घर आ गए हो! पिता के हृदय तक। उसकी बाँहों में। अब वह तुम्हारी रक्षा करता है, संरक्षक, अर्थात् व्यवस्था, नहीं।

उन पहले दिनों को याद करो, जब तुमने विश्वास किया। तब क्या हुआ था? तुम्हें प्रभु यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया गया! बहुतों ने देखा कि कैसे तुम्हें पानी में डुबोया गया और तुम फिर ऊपर आए। और तब तुमने **मसीह को पहन लिया। एक वस्त्र की तरह।** अब वही तुम्हारा जीवन है। अब तुम उसी के हो। अब तुम मसीही लोगों के रूप में जाने जाते हो। तुम्हारे जीवन में मसीहा पहचाना जाता है। हर एक में, पर तुम सब में मिलकर भी। मैं अभी इस पर भी आऊँगा कि तुम में मसीह किस बात से पहचाना जाता है।

संसार की नश्वर व्यवस्थाओं और भेदों को, धार्मिक, सामाजिक और वर्गीय सीमाओं और भेदभावों को तुम सब के सब पीछे छोड़ चुके हो। क्योंकि तुम सब, जिन्होंने बपतिस्मे में मसीहा का नाम लिया और उसे अपना प्रभु बनाया, उसमें एक हो गए हो। एक ऐसी एकता, जिसमें मनुष्यों के बीच अब कोई भेद नहीं। प्रतिष्ठा, लिंग, पद, हैसियत, नस्ल, जाति या वर्ग का मसीह में अब कोई महत्त्व नहीं। मसीह में न यहूदी है न यूनानी, न दास न स्वतंत्र, न पुरुष और स्त्री। **परमेश्वर के लिए और मसीह में हम सब एक हैं।**

तो यदि तुम मसीह से, अब्राहम के उस एक वंशज से, इस प्रकार जुड़े हो, तो तुम सचमुच अब्राहम का वंश बन गए हो। और तुम प्रतिज्ञा की हुई मीरास के अधिकारी बनते हो, अर्थात् अब्राहम की आशीष के: विश्वास से धार्मिकता, परमेश्वर का पितृत्व, और नई सृष्टि के वारिस होना। फिर से कहता हूँ: ख़तना तुम्हें अब्राहम के पुत्र नहीं बनाता – यह केवल यीशु मसीह में उद्धार है।

व्यवस्था से परमेश्वर के बेटे और बेटियाँ बनने तक: सब धर्म का अंत 4:1-7

जब तक वारिस नाबालिग है और वयस्क या बड़ा नहीं हुआ, तब तक उस समय की संस्कृति और सामाजिक व्यवस्था में वह किसी दास या बंधुआ से भिन्न नहीं होता। और यह तब भी, जब वह – मानो प्रतीक्षा में – सारी संपत्ति का वारिस और भावी स्वामी है। पर जब तक वह बालिग या वयस्क नहीं होता, वह अपने अभिभावक और प्रबंधक के अधीन रहता है। तब तक, जब तक वह समय नहीं आता जिसे पिता ने ठहराया है।

ठीक उसी तरह हम यहूदी भी संसार के तत्वों के, अर्थात् व्यवस्था के, बंधुओं और दासों की तरह अधीन थे। हाँ, उनमें क़ैद। एक ऐसी चीज़ में बँधे हुए जो इस नश्वर, गिरे हुए संसार की है और पुत्रत्व के उस आदर और गरिमा से नीचे है जो हमें सीधे पिता से जोड़ता है।

पर फिर स्वर्गीय पिता का ठहराया हुआ समय आ गया। मानो "ऊपर से" तय किया हुआ: **जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को हमारे पास भेजा**। जब वह पूरा हुआ जिसकी प्रतिज्ञा थी और व्यवस्था के समय का अंत निकट था। स्वर्ग से भेजा गया, उसने सारी महिमा त्याग दी। एक साधारण स्त्री से जन्मा। पूरी तरह मनुष्य। सच्चा यहूदी। मूसा की व्यवस्था के अधीन जन्मा, जिसे उसने पूरी तरह पूरा किया। ताकि वह उन्हें मोल लेकर छुड़ाए जो व्यवस्था और उसकी संरक्षकता के अधीन थे और मृत्यु-श्राप की धमकी के नीचे जीते थे। इस तरह वह उन्हें बाहर निकालकर पुत्र और वारिस के पूरे पद में ले आया। जैसे एक नए निर्गमन में: पुराना बीत गया। नया आ गया। अब हम आख़िरकार परमेश्वर के बेटे और बेटियाँ हैं। लेपालक बनाए गए। मूसा की व्यवस्था की सुरक्षा में रहने वाले नाबालिग बच्चों से हम पिता के वयस्क और स्वतंत्र बेटे और बेटियाँ बन गए। उसके हस्तक्षेप ने यह संभव किया। पुत्र मनुष्य बना, ताकि हम मनुष्य पिता के बेटे और बेटियाँ बनें।

क्योंकि अब तुम सब सनातन के बेटे और बेटियाँ हो, उसने अपने पुत्र का आत्मा तुम्हारे हृदयों में भेजा है। उसने हमें अपने पुत्र का स्थान दिया है, हाँ, यीशु के बगल में। यह आत्मा हमारी आत्मा के साथ मिलकर पुकारता, प्रार्थना करता और विनती करता है। हमारे हृदय से, हमारे अंतरतम से। हमारे पूरे अस्तित्व से वे अकल्पनीय शब्द बह निकलते हैं, जिन्हें केवल परमेश्वर की सच्ची सन्तान ही कह सकती है: **अब्बा, प्रिय पिता!** यह आत्मा, हम में मसीह, हमारे हृदयों को परमेश्वर पर गहरे भरोसे में बदल देता है। ठीक तभी हम अपने पिता को भाते हैं, जब हम सब कुछ उसी से आशा करते हैं। ठीक वैसे ही जैसे यीशु, जिसने बड़े संकट में ये शब्द प्रार्थना में कहे।

इसलिए ध्यान दो और समझो कि अनुग्रह और विश्वास के द्वारा तुम क्या बन गए हो: तुम अब मूसा की व्यवस्था के नाबालिग बंधुए नहीं रहे। तुम परमेश्वर के बेटे और बेटियाँ हो! और इसलिए अब्राहम के साथ वारिस। मसीहा, हमारे प्रभु यीशु, के द्वारा। अब तुम वहाँ पहुँच गए हो जहाँ पिता तुम्हें हमेशा से चाहता था।

क्या तुम फिर से दास बनना चाहते हो? तुम स्वतंत्रता को दाँव पर लगा रहे हो और सब कुछ जोखिम में डाल रहे हो! 4:8-11

ज़रा उस समय को याद करो, जब तुम इस पिता-परमेश्वर को नहीं जानते थे। तुमने अपने आप को मूर्तियों के अधीन कर दिया था। तुम सोचते थे कि वे देवता हैं। पर वे कुछ भी नहीं थीं। वे हाथों से बनाई गई थीं। अब तुमने एकमात्र, सच्चे और जीवित परमेश्वर को जान लिया है। हाँ, वही तो है जिसने पहले तुम्हें जाना। और तुम्हें अपने पास बुलाया और अपनी सन्तान और वारिसों के रूप में स्वीकार किया। तो प्रश्न और भी बड़ा है: तुम ठीक अभी कैसे फिर से उस पुराने जीवन में, उसके तुच्छ और दुर्बल तत्वों और धार्मिक धारणाओं में, लौटना चाह सकते हो? आत्मिक रूप से वयस्क बेटे-बेटियाँ और वारिस तुम वहाँ नहीं हो सकते। क्या तुम सचमुच इन धारणाओं के और यीशु में समाप्त हो चुकी धार्मिक रीतियों के पीछे फिर से चलना चाहते हो? अब तुम कुछ विशेष पर्व-दिनों, महीनों, पर्व-कालों और वर्षों को मानते हो। यद्यपि तुम तो यहूदी हो ही नहीं। डरते-डरते तुम अपना जीवन यहूदी पर्व-पंचांग के अनुसार ढालते हो। पर ऐसे तो नाबालिग जीते हैं। छोटे बच्चों की तरह, जो बड़े नहीं हुए। यह सब मैं तुम्हारे पास नहीं लाया था। **यह सुसमाचार का वह संदेश नहीं है जो तुम्हें परमेश्वर के वयस्क बेटे और बेटियाँ बनाता है।** प्रतिज्ञा के वारिस। मुझे बड़ा डर है कि तुम्हारे बीच मेरा सारा परिश्रम व्यर्थ गया।

इस मुलाक़ात के बाद ऐसा कैसे हो सका? 4:12-20

प्रिय भाइयो और बहनो, हम तो एक-दूसरे को अच्छी तरह समझते हैं। मैं तुमसे विनती करता हूँ, हम तो यीशु के कारण एक-दूसरे के हैं। क्या तुम्हें याद है कि मैं तुम्हारे पास कैसे आया था? मेरी शारीरिक दशा ख़राब थी। मैं लगभग टूट चुका था। टॉरस पर्वतमाला के पार लंबी पैदल यात्रा के बाद मैं पूरी तरह थका हुआ था। इसी दयनीय दशा में मैंने तुम्हें सुसमाचार, शुभ संदेश, सुनाया। और तुम? तुमने इस कारण न तो मुझे तुच्छ जाना, न घृणा से मेरे सामने ज़मीन पर थूका। ऐसी अपेक्षा की जा सकती थी। पर तुमने मुझे ऐसे ग्रहण किया मानो मैं परमेश्वर का स्वर्गदूत हूँ। उससे भी बढ़कर, मानो मैं स्वयं यीशु मसीह हूँ।

तुम इससे कितने आनंदित थे। **तब तुम चकित थे और आनंद से भर उठे थे। पर वह आनंद कहाँ चला गया?** तुम इतने भावविभोर थे कि मेरे लिए अपनी आँखें निकालकर मुझे दे देते।

क्या तुम सचमुच सोचते हो कि मैं अचानक तुम्हारा शत्रु बन गया, क्योंकि अब मैं तुम्हारी आलोचना करता हूँ और तुम्हें सच लिखता हूँ? ये लोग, जो तुम्हें ख़तने का प्रचार करते हैं ताकि तुम परमेश्वर के बेटे और बेटियाँ बनो, अच्छी नीयत नहीं रखते। वे तुम्हें अपने पर निर्भर बनाना चाहते हैं। मसीह पर नहीं। तुम्हें उनकी ट्रॉफ़ी बनना है। तुम्हें मुझे, पौलुस को, शत्रु मानना है। पर उनके लिए तुम्हें जी-जान से परिश्रम करना है। हाँ, भलाई के लिए परिश्रम करना अनुकरणीय है। तुम्हारा उत्साह मेरी अनुपस्थिति में भी दिखाई देता है। या तब क्या तुम दूसरी ओर भाग जाते हो? सदा वैसे ही जियो, जैसे सुसमाचार की स्वतंत्रता में परमेश्वर के वयस्क बेटे और बेटियाँ जीते हैं! इन लोगों के सामने भी!

मेरे बच्चो, मुझे ऐसा लगता है मानो मुझे पीड़ादायक प्रसव-वेदना के साथ तुम्हें दूसरी बार जन्म देना है। **ताकि मसीह तुम में जन्म ले**। ऐसा ही तब भी था, जब मैं पहली बार तुम्हारे पास था। केवल मसीह – न कि ख़तना या व्यवस्था या धार्मिक रूप – तुम्हारे हृदय और जीवन में आकार ले। तुम्हारी शुरुआत तो इतनी अच्छी थी। मैं क्या कुछ न दे दूँ, यदि अभी फिर तुम्हारे पास होता! और आमने-सामने सही शब्दों से तुम्हें फिर से मसीह और उसकी स्वतंत्रता के लिए जीत लेता। पत्र कभी-कभी कठोर और अव्यक्तिगत लगता है। धार्मिक दिखावे की दासता में तुम्हारे लौट जाने से मैं काफ़ी असमंजस में हूँ।

अब्राहम की दो स्त्रियाँ और दो पुत्र; दो वाचाएँ, दो पर्वत और दो बार यरूशलेम 4:21-31

हे गलातियो, तुम जो यहूदियों की तरह – यद्यपि तुम यहूदी नहीं हो – व्यवस्था के अधीन जीना चाहते हो, क्या तुम व्यवस्था की नहीं सुनते? मूसा पहली पुस्तक में अब्राहम की एक घटना बताता है, जो बहुत अच्छी तरह स्पष्ट करती है कि तुम किस बात में उलझ गए हो। अब्राहम के दो पुत्र थे। एक उसकी दासी से था। दूसरा उसकी पत्नी से, जो दासी नहीं, बल्कि स्वतंत्र स्त्री थी। दासी का पुत्र बिना विश्वास के, मानवीय शक्ति और प्रयास से उत्पन्न हुआ था। दूसरा संसार में आया – हर मानवीय अपेक्षा या संभावना के विरुद्ध – परमेश्वर की प्रतिज्ञा और वचन-दान के द्वारा। ये दोनों स्त्रियाँ हमारे लिए एक चित्रात्मक, एक प्रतीकात्मक (टाइपोलॉजिकल) अर्थ रखती हैं। ज़रा उनकी तुलना करो। दोनों स्त्रियों में से हर एक एक वाचा का प्रतीक है, जो विधिवत बाँधी गई थी। एक **सीनै पर्वत** की, जहाँ मनुष्य व्यवस्था के दासत्व में जन्म लेता है। इसका प्रतीक दासी **हाजिरा** है। अरब में व्यवस्था दिए जाने वाले पर्वत का। यह वर्तमान **यरूशलेम** के अनुरूप है और इस्राएल की प्रजा का प्रतीक है। यह यरूशलेम, जहाँ मसीहा को क्रूस पर चढ़ाया गया, अपनी सन्तानों के साथ मूसा की व्यवस्था के दासत्व में है।

पर एक और यरूशलेम भी है – जो ऊपर है, **स्वर्गीय यरूशलेम**। यह स्वर्गीय नगर उस सब का सार है जो ऊपर से आता है, अर्थात् मसीह, आत्मा, उसका राज्य, और नए संसार में परमेश्वर की दृश्य उपस्थिति। यह यरूशलेम स्वतंत्र है, अब्राहम की पत्नी की तरह। वही हमारी माता है। ऐसा ही महान भविष्यद्वक्ता यशायाह ने अध्याय 54 में पहले ही कहा था: “हे बाँझ, आनंदित हो, तू जिसने कभी सन्तान को जन्म नहीं दिया; जयजयकार कर और ऊँचे स्वर से गा, तू जो कभी माँ नहीं बनी! क्योंकि अकेली स्त्री की सन्तानें उस स्त्री की सन्तानों से अधिक होंगी जिसका पति है।”

हे गलातिया के मसीहियो, तुम सब, इसहाक की तरह, प्रतिज्ञा की सन्तान हो! स्वतंत्रता के लिए जन्मे, ताकि वारिस बनो।

उस समय स्वाभाविक रीति से जन्मा इश्माएल आत्मा के अनुसार जन्मे को सताता था। और ऐसा ही मैं लगातार अनुभव करता हूँ। यहूदी ही हैं जो सताव भड़काते हैं। क्योंकि वे क्रूस पर चढ़ाए गए मसीहा को अस्वीकार करते हैं, जो अन्यजातियों के लिए भी आया।

पर इस स्थिति के बारे में पवित्रशास्त्र क्या कहता है? कोई समझौता नहीं था। और आज भी ऐसा ही हो: दासी और उसके पुत्र को डेरे से बाहर निकाल दे! उन्हें भगा दे। क्योंकि दासी का पुत्र स्वतंत्र स्त्री, सारा, के पुत्र के साथ वारिस नहीं होगा।

इश्माएल परमेश्वर के साथ ऐसे संबंध का प्रतीक है जो अधीनता और अपनी उपलब्धि पर टिका है। इस-हाक पुत्रत्व के जीवित संबंध का प्रतीक है, सुसमाचार के मर्म का, जिसने हमें प्रेम करने वाले पिता के बेटे और बेटियाँ बना दिया है।

प्रिय भाइयो और बहनो, मैं सार में कहता हूँ: हम दासी की नहीं, बल्कि स्वतंत्र स्त्री की सन्तान हैं। अपने मन में स्पष्ट कर लो कि इसका तुम्हारे लिए क्या अर्थ है और यह अंतर कितना निर्णायक है।

या तो – या: पूरी व्यवस्था, या मसीह, अनुग्रह और स्वतंत्रता 5:1-12

मसीह हमारे लिए आया। वह स्वतंत्रता लाया। वह हमें स्वतंत्र करने आया। और उसने यह कर दिया। इस **मसीह-स्वतंत्रता** में बने रहो। फिर से दासत्व में खिंचने मत दो। विरोध करो और दृढ़ रहो। मैं, पौलुस, तुमसे कहता हूँ: यदि तुम ख़तना करवाओगे, तो मसीह तुम्हारे किसी काम का न होगा। मसीह और उसके दिए छुटकारे का उस व्यवस्था से कोई लेना-देना नहीं, जिसे तुम पूरा करना चाहते हो। यह तुम्हारी सहायता नहीं करती, हाँ, यह तुम्हारी सहायता कर ही नहीं सकती, यदि तुम व्यवस्था पर चलना चाहते हो। वैसे, यदि तुम पुत्र और वारिस बनने के लिए ख़तना करवाते हो, तो तुम्हें **पूरी** व्यवस्था माननी होगी। तब ख़तना बिल्कुल भी पर्याप्त नहीं। ख़तने के साथ पूरी व्यवस्था के अधीन जीवन जुड़ा है। धोखा मत खाओ। कोई सस्ता व्यवस्थावाद नहीं होता। व्यवस्था ख़तने से कहीं अधिक माँगती है!

जानते हो, यह बात कहाँ तक जाती है? मसीह, मसीहा, से तुम्हारा संबंध कट जाता है और टूट जाता है, यदि तुम व्यवस्था के द्वारा धर्मी बनना चाहते हो। तब तुम **परमेश्वर के अनुग्रह से गिर गए हो**। जैसे किसी जीवन-नौका से। वह अनुग्रह, जिसने तुम्हें बचाया और धर्मी बनाया, जिसमें हम जीते हैं, तब तुम्हारे लिए लागू नहीं रहता। पर उसका मुफ़्त अनुग्रह तुम्हारे लिए पर्याप्त क्यों नहीं? तुम अपने आप पर क्यों भरोसा करना चाहते हो?

हमने तो परमेश्वर का स्वतंत्र करने वाला और प्रकाश देने वाला आत्मा पाया है! उसकी सामर्थ्य से हम विश्वास करते हैं। उसके द्वारा हम धार्मिकता की आशा की बाट जोहते हैं। यही उद्धार की पूर्णता है। हम आनंद से उस दिन की ओर देखते हैं, जब सब कुछ प्रकट होगा और हमारा धर्मी ठहराया जाना, यीशु में पूरा उद्धार, दिखाई देगा। इसलिए हर किसी के लिए यह स्पष्ट हो जाना चाहिए: मसीहा में इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि किसी का ख़तना हुआ है या नहीं। मसीह के अनुयायियों के लिए न ख़तने का कोई अर्थ है, न ख़तनारहित होने का। उसमें ऐसा कुछ नहीं जो परमेश्वर को भाए। केवल विश्वास, यीशु से उद्धार देने वाला संबंध, मायने रखता है। केवल उस पर बिना शर्त भरोसा, जो परमेश्वर ने मसीह में किया है और आज करता है, हमें परमेश्वर के साथ सही संबंध में लाता है। और यह विश्वास कैसे दिखाई देता है? एक-दूसरे के प्रति सक्रिय और निःस्वार्थ प्रेम के द्वारा। इसी से तुम उस विश्वास को पहचान सकते हो जो तुम्हें धर्मी और परमेश्वर के पुत्र बनाता है।

तुमने इतनी अच्छी शुरुआत की थी और विश्वास में इतनी अच्छी तरह आगे बढ़ रहे थे। किसने अब तुम्हें रोक दिया और सुसमाचार के सत्य के पीछे आगे चलने से थाम लिया? यह बहकावा उसकी ओर से नहीं है जो तुम्हें विश्वास के लिए बुलाता है। जब तुम इन व्यवस्था-शिक्षकों की बात पर कान लगाते हो, तो तुम्हारी स्थिति के लिए एक प्रभावशाली तुलना है: थोड़ा-सा ख़मीर पूरे गूँधे हुए आटे को ख़मीर कर देता है।

मुझे प्रभु यीशु मसीह में तुम पर भरोसा है कि तुम भी इसे ऐसे ही देखोगे। जो तुम्हें उलझाते और व्यवस्थावाद की ओर धकेलते हैं, उन्हें परमेश्वर के न्याय में अपने किए का हिसाब देना होगा। और अपना दंड पाना होगा। वे ऐसे नहीं बच निकलेंगे, मानो कुछ हुआ ही न हो।

यदि मैं सचमुच, जैसा मेरी अनुपस्थिति में दावा किया जाता है, ख़तने का प्रचार करता हूँ, तो फिर यहूदी मुझे अब भी क्यों सताते हैं? ज़रा सोचो! तब तो क्रूस की ठोकर और उसका कलंक, जिसका मैं प्रचार करता हूँ, मुझे सताने का कोई कारण न रहता। नहीं, मैं ख़तने का न प्रचार करता हूँ, न उसकी माँग करता हूँ। यह बात मेरे मन में कभी नहीं आती।

जहाँ तक मेरी बात है, जो तुम्हें बेचैन करते हैं, वे अपने आप को नपुंसक ही करवा लें। तब वे व्यवस्था के अनुसार (व्यवस्थाविवरण 23:1) इस्राएल में, परमेश्वर की प्रजा में, शामिल ही न रहते।

आत्मा की निःस्वार्थ स्वतंत्रता और परमेश्वर के आत्मा के फल में जियो 5:13-24

मैं फिर कहता हूँ: भाइयो और बहनो, तुम स्वतंत्रता के लिए बुलाए गए हो। स्वार्थ और मूर्तिपूजा के दासत्व से भी और मूसा की व्यवस्था के दासत्व से भी! **तुम्हारी स्वतंत्रता परमेश्वर की इच्छा है**।

पर इस स्वतंत्रता को गलत मत समझो, मानो अब तुम आख़िरकार दूसरों की कीमत पर स्वार्थ में अपने आप को साकार कर सकते हो। या पड़ोसी की परवाह किए बिना अपनी मनमानी चला सकते हो। स्वतंत्रता तो इस बात में है कि अब तुम प्रेम में एक-दूसरे की सेवा करने के लिए स्वतंत्र हो। तब तुम मूसा की व्यवस्था के सार और सबसे महत्त्वपूर्ण भाग को भी पूरा करोगे। **क्योंकि वह एक ही बात में पूरी हो जाती है: तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।**

यदि तुम्हारे लिए ख़तने की आज्ञा उस बात से अधिक महत्त्वपूर्ण है जिस पर व्यवस्था सचमुच ज़ोर देती है, तो सावधान रहो कि तुम एक-दूसरे को फाड़ न डालो और खा न जाओ। आपस के तुम्हारे सब झगड़ों में, ख़तना किए हुओं और ख़तनारहितों के बीच भी, ऐसा हो सकता है।

पवित्र आत्मा की स्वतंत्रता और सामर्थ्य में जियो। उसे तो तुमने अपने विश्वास के आधार पर पाया है। वह तुम्हारी सहायता करता है, ताकि एक-दूसरे के साथ व्यवहार में तुम अपने पुराने जीवन की अभिलाषाओं के पीछे न चलो, जब तुम मसीह को नहीं जानते थे। परमेश्वर का आत्मा, हाँ, परमेश्वर की व्यक्तिगत उपस्थिति, तुम्हारे जीवन में आ गया है और पुराने, शारीरिक, स्वाभाविक और पापमय व्यवहार पर जय पाता है। ख़तना तुम्हें अपना बिना छुटकारे का व्यवहार उतार फेंकने में सहायता नहीं करता। बात, यदि है भी, तो **तुम्हारे हृदय के ख़तने** की है। वह महत्त्वपूर्ण है और परमेश्वर के आत्मा के द्वारा होता है।

पुराना, शारीरिक और पापमय स्वभाव तुम में परमेश्वर के आत्मा को जगह नहीं देना चाहता। वह अपने आप को साकार करना और अपनी ही चलाना चाहता है। पर हम में परमेश्वर के आत्मा ने यह संघर्ष स्वीकार कर लिया है और वह हम में मसीह का स्वभाव उत्पन्न करना चाहता है। इसलिए जान लो कि "**आत्मा और शरीर**" के बीच, पुराने और नए जीवन के बीच, संघर्ष तुम्हारे जीवन का हिस्सा है। अंत तक। तुम में व्यक्तिगत रूप से, पर विशेषकर आपस में भी। हर पक्ष यह रोकना चाहता है कि तुम वैसा करो जैसा दूसरा पक्ष चाहता है। इसलिए अपने आप को ढीला मत छोड़ो, अपने पापमय झुकावों के पीछे मत चलो, बल्कि उस पर ध्यान दो जो परमेश्वर तुम में करना चाहता है।

यदि तुम परमेश्वर के आत्मा से प्रेरित और उत्साहित होते हो, यदि तुम्हारे जीवन पर उसकी अगुवाई और प्रभुता है, तो तुम व्यवस्था के अधीन नहीं हो। तब तुम विश्वास से परमेश्वर के स्वतंत्र बेटे और बेटियों के रूप में जीते हो – अब्बा, अपने पिता, के साथ सहभागिता में।

शरीर के काम

ताकि तुम सचमुच समझो कि “शरीर” से, उसकी अभिलाषाओं और झुकावों से, मेरा क्या अर्थ है, मैं अब शरीर के कुछ कामों को गिनाता हूँ। ये सब नहीं हैं, उससे बहुत दूर। ये तुम्हें, तुम्हारी कलीसियाओं को और सब मनुष्यों से तुम्हारे संबंधों को हानि पहुँचाते और नष्ट करते हैं। अपने जीवन को जाँचो कि क्या वहाँ स्वार्थ के काम आदत बन गए हैं। और क्या तुम उन्हें सहते हो और नरमी से अपने आप को क्षमा कर देते हो। बल्कि उन्हें अपने जीवन से निकाल भगाओ, उन्हें बंद करो, उनसे इनकार करो और उन्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस पर ले आओ।

सबसे पहले मैं यौन पापों का नाम लेता हूँ। वे बहुत फैले हुए हैं। जब उन्हें बिना रोक-टोक और बिना मर्यादा के जिया जाता है, तो उनका विनाशकारी प्रभाव उन सब मनुष्यों पर आक्रमण करता है – पुरुषों और स्त्रियों, युवाओं और बूढ़ों पर – जो अपने आप को बेलगाम यौनता के हवाले कर देते हैं। चाहे विचारों में, रवैयों में या कर्म में। अब एक-एक करके:

व्यभिचार: (यूनानी **porneia**) – अनैतिकता, विवाह के बाहर **हर प्रकार** की यौन गतिविधि, अपने जीवनसाथी के प्रति विश्वासघात।

अशुद्धता: विकृत, गंदी बातें; यौन क्षेत्र में निर्लज्ज आचरण, विवाह के भीतर या बाहर; जैसे स्त्री को केवल भोग की वस्तु बना देना।

लुचपन: असंयम, उच्छृंखलता और यौन शोषण।

मूर्तिपूजा: सृष्टिकर्ता के बजाय सृष्टि की उपासना। वह सब कुछ जो परमेश्वर और उसकी इच्छा को जीवन के पहले स्थान से हटा देता है। इसी से दस आज्ञाओं में से पहली आज्ञा चेतावनी देती है। मूर्ति-पंथ, जिससे गलाती छुड़ाए गए थे।

जादुई जड़ी-बूटियाँ: (यूनानी pharmakeia) जादू, टोना-टोटका, गुप्तविद्या और प्रेतवाद के क्षेत्र में चेतना बदलने वाले नशीले पदार्थों का सेवन। जीवन से निपटने के लिए, वास्तविकता से भागने के रूप में नशीले पदार्थों का सेवन, स्वास्थ्य को हानि पहुँचाने वाले और जीवन को नष्ट करने वाले सब परिणामों के साथ।

बैर: मनुष्यों और जन-समूहों से विमुखता और घृणा।

झगड़ा: मनमुटाव, तकरार, झगड़ालू मन।

जलन: ईर्ष्या का एक रूप, स्वार्थी और अपने ही लाभ पर ध्यान रखने वाला आचरण, संदेह और खो देने का गहरा भय।

क्रोध: हिंसक ग़ुस्से के विस्फोट, मनुष्यों और वस्तुओं पर बेलगाम आक्रमण, अक्सर छोटी-छोटी बातों पर।

कलह: झगड़ों और षड्यंत्रों की ओर दुष्ट झुकाव।

फूट: एकता का खो जाना। परिणामस्वरूप: बिखराव, संबंध टूटना, मतभेद।

दलबंदी और पंथ: पंथवादी सोच, विशेष शिक्षाओं या व्यवस्थावादी माँगों का समर्थन और उन पर अत्यधिक ज़ोर, दूसरों को बाहर रखने वाली, संकीर्ण बनाने वाली, अपने को अलग-थलग करने वाली गुटबंदी।

डाह: दूसरे का भला न देख पाने और उसे स्वयं पाने की आदत।

हत्या: परमेश्वर के अधिकार-क्षेत्र पर सबसे बुरा आक्रमण, जिसने मनुष्य को रचा है।

मतवालापन: शराब का अत्यधिक सेवन, नशे की अवस्थाएँ।

रंगरलियाँ: शराब पीने और ठूँसकर खाने की दावतों से भरी पापमय जीवन-शैली, पेटूपन, भोग-विलास।

इत्यादि।

हे प्रिय गलातियो, मैं यह पहले कह चुका हूँ और अपनी चेतावनी दोहराता हूँ: कलीसियाओं में, तुम्हारे बीच भी, जो लोग आदत से ऐसे काम करते हैं और यह मानना नहीं चाहते कि ये पाप हैं, उन्हें **परमेश्वर के अनन्त राज्य में कोई मीरास** नहीं मिलेगी। फिर यह सोचना भी पूरी तरह निरर्थक है कि ख़तना किया हुआ होना मेरे लिए अनन्त मीरास पक्की कर देगा। “शरीर” का मार्ग कभी परमेश्वर के राज्य में समाप्त नहीं होता!

आत्मा का फल

बिल्कुल अलग है वह, जो परमेश्वर, पवित्र आत्मा, तुम में उत्पन्न करना चाहता है। उसका अपना स्वभाव तुम में दिखाई दे। इसलिए ऐसे जीवन को चुनो जो अच्छा फल लाता है, जो केवल आत्मा के द्वारा विश्वास में बढ़ता है:

1. प्रेम: परमेश्वर का बलिदान के लिए तैयार प्रेम, जो कोई भावना नहीं, बल्कि इच्छा का निर्णय है। परमेश्वर और मनुष्यों के प्रति प्रेम के बिना मसीही जीवन में भी सब कुछ व्यर्थ है (1 कुरिन्थियों 13)। हम प्रेम करते हैं, क्योंकि पहले उसने हमसे प्रेम किया। और इसके द्वारा मूसा की व्यवस्था को भी पूरा करते हैं। परमेश्वर का पवित्र प्रेम सबसे बड़ा और सबसे महत्त्वपूर्ण है, और इसलिए मैं उसका नाम सबसे पहले लेता हूँ।

2. आनन्द: सच्चा, गहरा, मज़बूत आनन्द उस पर जो परमेश्वर हमारे लिए है और जो उसने हमारे बीच और दूसरों के बीच किया है, जो वह अब करता है और जो वह अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार करेगा; ऐसा आनन्द, जो मिलकर भी अनुभव किया जाता है और बाहरी परिस्थितियों (ग़रीबी, सताव, बीमारी, दुःख) पर निर्भर नहीं होता।

3. शान्ति: (इब्रानी शालोम) केवल झगड़े का न होना नहीं, बल्कि मेल-मिलाप, हार्दिक आपसी व्यवहार, जुड़ाव, पूर्णता, एक-दूसरे की ओर बढ़ना।

4. धीरज: दूसरों के साथ व्यवहार में सहनशीलता और उदारता; साथी मनुष्यों और परिस्थितियों को सहते रहने की निरंतर तत्परता; प्रेम का निष्क्रिय, पर अडिग पक्ष। घास को बढ़ाने के लिए उसे खींचना नहीं पड़ता।

5. कृपा: शुभचिंतक, सदा सहायक और समझदार रवैया, कोमल स्वभाव, उदारता; प्रेम का सक्रिय पक्ष।

6. भलाई: हार्दिक भलाई, कृपा के समान; दूसरे को वह देना जो उचित और अच्छा है; भला करना।

7. विश्वासयोग्यता: (विश्वास) – निष्ठा; भरोसेमंद होने और सच्चाई का सद्गुण, उस परमेश्वर का अनुकरण, जो सदा अपने वचन पर बना रहता है और अपनी प्रतिज्ञाओं के प्रति विश्वासयोग्य है।

8. नम्रता: कोमलता, स्वार्थ, अत्यधिक माँग और अपने को बढ़ा-चढ़ाकर आँकने का उलटा; अपनी कमज़ोरियों और पाप के बोध में अपने बारे में दीन-भाव, दूसरों की समस्याओं और कमज़ोरियों के प्रति सहानुभूति।

9. संयम: आत्म-नियंत्रण, आत्म-अनुशासन और आत्म-संयम, संतुलन, मर्यादा और मध्य मार्ग में जीना।

जब ये बातें तुम में पाई जाती हैं, तब तुम निश्चिंत हो सकते हो कि तुम किसी व्यवस्था का उल्लंघन नहीं करते। इस फल में से कुछ भी वर्जित नहीं है। इसके विपरीत: व्यवस्था न इन गुणों की माँग करती है, न उन्हें उत्पन्न करती है। **ये सब फल, यह एक फल, एक ही शब्द में समाए हुए हैं: यीशु मसीह**। वह अपने आत्मा के द्वारा तुम में जीता है। इसलिए अपना जीवन केवल उसी को सौंप दो।

जो यीशु मसीह के हैं, जो उस पर भरोसा करते हैं, उन्होंने विश्वास में आते समय कुछ निर्णायक किया: उन्होंने अपना पुराना जीवन, शरीर को उसकी पापमय लालसाओं और विनाशकारी अभिलाषाओं समेत, **यीशु मसीह के क्रूस** तक पहुँचा दिया। उन्होंने जानबूझकर अपने पुराने, पापमय जीवन से मुँह मोड़कर क्रूस की ओर, यीशु मसीह की ओर रुख़ किया। यह पुराना जीवन केवल क्रूस के ही योग्य है। हमारे लिए यीशु की प्रतिनिधि मृत्यु में उस पर दंड की आज्ञा दी गई और इस प्रकार वह समाप्त हो गया। वह यीशु की मृत्यु में मर गया। तुमने क्रूस के इस मृत्यु-दंड को अपने लिए स्वीकार कर लिया है। पुराने स्वभाव से और पुराने स्वभाव (शरीर) के लिए जीना तुम्हारे लिए अतीत की बात है।

आत्मा के लिए बोना: एक-दूसरे के लिए उपस्थित रहना, प्रेम जीना, उदार होना, अपने आप में फूले न रहना 5:25-6:10

परमेश्वर के आत्मा ने हमें नया जीवन दिया है। उसने हमें एक नई सृष्टि बना दिया है। हमारा अस्तित्व नया है। वह परमेश्वर के हाथ में है। तो अब उसके अनुसार जियो भी। आत्मा के पीछे चलो! उसके पदचिह्नों पर! मिलकर, एक-दूसरे के साथ एकता में। **भविष्य का जीवन अभी से, यहीं और अभी जियो।**

आओ, एक-दूसरे से और एक-दूसरे के सामने व्यर्थ ख्याति और आदर खोजना छोड़ दें। आओ, आख़िरकार एक-दूसरे को भड़काना और चुनौती देना छोड़ दें! आओ, एक-दूसरे से डाह करना छोड़ दें! यह सब तो क्रूस पर समाप्त हो चुका है!

प्रिय भाइयो और बहनो, हर कोई **ग़लत कदम** उठा सकता है और ठोकर खा सकता है। हर कोई किसी पाप या अपराध से अचानक घिर सकता है। हर कोई कभी इस विषय में किसी ग़लत धारणा के पीछे दौड़ सकता है कि भक्तिपूर्ण या परमेश्वर-भीरु होना क्या है। पर तुम, जो आत्मिक हो, जो आत्मा का जीवन जीते हो, और अपने पड़ोसी को लड़खड़ाते देखते हो, उन्हें फिर उठाने में मदद करो। उन्हें सुधारकर और ठीक करके। उन्हें उनके ग़लत कदम की ओर ध्यान दिलाओ। ठीक तब, जब वे स्वयं उसे नहीं देखते। उन्हें आत्मा की राह पर वापस आने में मदद करो। पर नम्रता से, सावधानी से, नीचा दिखाने वाले या घमंडी आलोचकों की तरह नहीं। तुम सबके साथ भी तो वही हो सकता है। सजग रहो! तुम भी उन्हीं प्रलोभनों के सामने हो और गिरने और लड़खड़ाने के ख़तरे में हो। इसमें अपने पापों और भूलों को ध्यान में रखते हुए अपनी आलोचनात्मक जाँच करो। शायद ही कोई हो, जिसके साथ ऐसा पहले न हुआ हो। **ठीक तभी हमें एक-दूसरे की ज़रूरत होती है!**

आओ, एक-दूसरे के बोझ उठाएँ, जैसे मसीह ने स्वेच्छा से क्रूस और हमारे पाप उठाए। हमारी दुर्बलता और निरंतर प्रलोभन में पड़ने की प्रवृत्ति का बोझ। कलीसिया ऐसे लोगों का भी एक समूह है जो अब भी पाप करते हैं। और जिसे पाप से लगातार ख़तरा रहता है। ऐसे बोझ भी हैं, जहाँ तुम्हें एक-दूसरे का साथ देना और मिलकर उठाना चाहिए: बीमारी, आर्थिक कठिनाइयाँ, सताव, अकेलापन, भय, निराशा, अत्यधिक बोझ और बहुत कुछ।

इस प्रकार तुम व्यवस्था को पूरा करते हो। **मसीह की व्यवस्था को!** निष्क्रियता, पड़ोसी में अरुचि और आलस्य परमेश्वर के आत्मा से नहीं आते। “समय नहीं”, “रुचि नहीं” या “इसका कोई मतलब नहीं” या “यह निराशाजनक है” आदि कहना आत्मा के कूच-क्रम में कोई विकल्प नहीं है। गलतियों और पापों के बावजूद हम एक-दूसरे से प्रेम करते रहेंगे! हमारा विश्वास तो ठीक सक्रिय प्रेम में ही काम करता और अपने आप को प्रमाणित करता है।

यदि कोई सोचता है कि वह कुछ विशेष है, या दोषरहित, या ऐसा कोई जिसे दूसरे की ज़रूरत नहीं, तो वह अपने आप को धोखा देता है। इसलिए हर कोई अपने आप को जाँचे और देखे कि वह क्या कर पाता है। **और वह भी परमेश्वर के सामने।** दूसरों से तुलना करके नहीं। परमेश्वर ही एकमात्र मापदंड है, जो हमारे हृदयों को जानता है। यह आत्म-धोखे या घमण्ड से सबसे अच्छी सुरक्षा है। तब कोई अपने कामों पर घमण्ड कर सकता है, यदि तब भी वह ऐसा करना चाहे। हर कोई उस दिन अपने लिए स्वयं उत्तरदायी होगा, जब हम परमेश्वर के सामने खड़े होंगे।

कलीसिया में हर किसी का अपना काम और दायित्व है, जिसे बस दूसरों पर टाला नहीं जा सकता। **आत्मा में जीवन सदा संगति में जीवन है!**

बोना और काटना

उनकी सहायता करो जो तुम्हें अच्छी शिक्षा और उपदेश देते हैं। केवल शब्दों से नहीं, बल्कि कर्म से और आर्थिक साधनों से। आश्चर्य मत करो कि सुसमाचार में गहन और अच्छी शिक्षा नहीं हो सकती, यदि तुम, जो आत्मिक बातें पाते हो, बदले में भौतिक चीज़ें देने के लिए तैयार नहीं हो। **अपने शिक्षकों, अगुवों और चरवाहों की सहायता करो!**

यह मत सोचो कि इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि तुम आपस में कैसा व्यवहार करते हो। धोखा न खाओ, परमेश्वर को तुम मूर्ख नहीं बना सकते। सब पर **बोने और काटने का प्राकृतिक सिद्धांत** लागू होता है। **मनुष्य जो कुछ बोता है, वही एक दिन काटेगा।** हमारे कर्म, हमारी सोच और व्यवहार के सदा परिणाम होते हैं। एक दिन हम उनका सामना करेंगे। उतने ही निश्चित रूप से, जितना ज़मीन में पड़े बीज से कुछ उगता और निकलता है। जो अपने जीवन के खेत में पुराना, बिना छुटकारे वाला जीवन बोता है, वह **विनाश** काटेगा। मैंने तुम्हें अभी लिखा है कि शरीर के कौन-से काम अभिप्रेत हैं, जिन्हें बिना परिणाम के नहीं किया जा सकता। जो अपना जीवन और अपने साधन, अपना जीवनकाल, अपनी ऊर्जा और पैसा अपने लिए जीवन के अनगिनत मनोरंजनों और भटकावों में लगाता है, वह एक दिन इस निष्कर्ष पर पहुँचेगा कि यह सब नाश हो जाता है।

पर जो अपने जीवन के खेत में आत्मा को बोता है, वह परमेश्वर और उसके आत्मा से **अनन्त जीवन** काटेगा। बहुत जल्द परमेश्वर की नई सृष्टि में, उसके अनन्त राज्य में। इसलिए आओ, हम भलाई करें – वह व्यर्थ नहीं है। आओ, हम थकें नहीं, क्योंकि कटनी का समय आएगा। एक बड़ा कटनी-उत्सव हमारी प्रतीक्षा कर रहा है। एक ऐसा, जो कभी समाप्त नहीं होगा। पर हमें भलाई करना छोड़ना नहीं है। तब भी नहीं, जब वह व्यर्थ लगे और कोई तुरंत कृतज्ञ प्रतिध्वनि न हो। इसलिए आओ, जब तक हमारे पास अभी समय और अवसर है, **सब मनुष्यों** के साथ भलाई करें। परमेश्वर के हृदय और खुले हाथों से सब ज़रूरतमंदों से मिलें और उन्हें आशीष दें। विश्वासियों की कलीसिया से शुरुआत करो, जिसमें तुम मसीह में अपने भाइयों और बहनों के साथ एक हो। वहाँ तुम प्रतिदिन आत्मा के लिए बो सकते हो।

परमेश्वर का हस्तक्षेप: गुलगुता का क्रूस अंतर पैदा करता है और एक साथ अंत भी है और आरंभ भी 6:11-18

अपनी पत्री के अंत में मैं तुम्हें अपने हाथ से लिख रहा हूँ, जिसे मैंने यहाँ तक एक प्रिय भाई को, जो अच्छा लिख सकता है, बोलकर लिखवाया है। यह तुम बड़े अक्षरों से पहचान लोगे। जो मैंने तुम्हें विस्तार से समझाया है, उसे मैं थोड़े शब्दों में सार रूप में कहता हूँ और मूल बात पर ले आता हूँ।

जो तुम्हें बेतुके ख़तने के लिए दबाव डालते हैं, वे बस अच्छे दिखना और अपना हठीला मिशन सफलता से पूरा करना चाहते हैं। यदि वे इसमें सफल होते हैं, तो उन्हें मसीह के क्रूस के कारण अपने यहूदी देशवासियों के सताव से डरने की ज़रूरत नहीं। **उनके लिए ख़तना मसीह के क्रूस से अधिक महत्त्वपूर्ण है। उनका लक्ष्य यह है कि तुम यहूदी बन जाओ।**

पर ये झूठे मिशनरी, जिनका ख़तना हुआ है, स्वयं व्यवस्था का पालन नहीं करते। वे यह ख्याति चाहते हैं कि तुम्हारे ख़तने पर घमण्ड कर सकें। मानो वे किसी पराजित शत्रु की खोपड़ी की खाल ऊँची उठाकर अपनी जीत का उत्सव मनाना चाहते हों।

पर मेरे, पौलुस के लिए, केवल **क्रूस का गौरव** ही चाहने योग्य है। क्रूस हर मानवीय प्रतिष्ठा-लालसा पर पानी फेर देता है। मनुष्यों के सामने और मनुष्यों से मिलने वाली ख्याति और आदर में मेरी कोई रुचि नहीं। हमारे प्रभु यीशु मसीह का क्रूस हमारी एकमात्र आशा है – हाँ, केंद्र, वह चट्टान, जिस पर हम खड़े हैं। मेरे लिए इसका अर्थ है: संसार से नाता ख़त्म! उसके धार्मिक और व्यवस्थावादी तत्वों से और उसकी मूर्तिपूजक जीवन-शैलियों से नाता ख़त्म। मेरी अपनी जीवन-शैली से भी, जो कभी यहूदी धर्म में मेरी थी। वहाँ एक नया संसार जन्मा। जीवन, न कि मृत्यु, क्रूस का लक्ष्य और आशा है! श्राप का काठ हमारे लिए जीवन का वृक्ष बन जाता है।

और मैं स्वयं इस पुराने, नाश होते संसार के लिए इसी क्रूस पर मर गया हूँ। अब मैं उसका नहीं हूँ। वह मुझे अब कुछ नहीं दे सकता। वह अब कुछ माँग नहीं सकता। **क्रूस के बाद कोई वापसी नहीं!**

ख़तना किया हुआ होना या न होना, यह क्रूस के द्वारा अतीत की बात हो गई है। क्रूस एक नई सृष्टि का आरंभ है। वह नहीं जो मनुष्यों को करना है, बल्कि वह जो परमेश्वर ने किया और रचा है। मसीह में एक नया अस्तित्व और विश्राम। नया युग आरंभ हो चुका है। अब केवल **विश्वास, अनुग्रह और मसीह की स्वतंत्र करने वाली व्यवस्था** मायने रखते हैं।

जितने **नई सृष्टि** के इस मापदंड के अनुसार जीते हैं, वे सब परमेश्वर की आशीष के अधीन हैं, उसकी शान्ति और उसकी दया के अधीन। वे परमेश्वर का सच्चा इस्राएल हैं। हाँ, परमेश्वर का नया इस्राएल, विश्वास के

द्वारा अब्राहम की सन्तान। ख़तना तुम्हें उस पुराने यरूशलेम से जोड़ता है जो दासत्व में है, व्यवस्था के अधीन इस्राएल से।

कृपया यहूदी धर्म की ओर लौटने की अपनी इन मनमानी हरकतों से मुझे और परेशान मत करो! मैं अपने शरीर पर सताव के दाग़ लिए हुए हूँ। जैसे यीशु अपने क्रूस के। मेरे घाव के निशान साफ़ भाषा बोलते हैं। क्रूस की भाषा, जिसका मैं प्रचार करता हूँ।

हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह का अनुग्रह प्रतिदिन तुम्हारे विचारों में उपस्थित रहे। **उस पर निर्माण करो, उस पर आशा रखो, उसी से जियो।**

आमीन।

अंत में

मुझे पूरी आशा है कि पढ़ते समय आपने अनुभव किया कि परमेश्वर आपसे कैसे बात करता है। कैसे वह उत्साह देता है, सिखाता है, पर हर उस बात से चेतावनी भी देता है जो उसकी ओर से नहीं आती और इस-लिए हमें हानि पहुँचाती है।

हर उस भली बात के लिए उसका धन्यवाद कीजिए, जो उसने आपके विषय में और सीधे आपसे कही है।

यदि आपके कोई प्रश्न हों, तो हमें लिखिए: hj-ronsdorf@t-online.de

नए नियम के और पाठ आपको www.hans-joerg-ronsdorf.de पर मिलेंगे।

यहाँ कुछ और महत्त्वपूर्ण सुझाव:

बाइबल पढ़िए। हो सके तो नियमित रूप से।

बाइबल दूसरे लोगों के साथ मिलकर पढ़िए – और उस पर आपस में बातचीत कीजिए।

प्रार्थना कीजिए कि परमेश्वर अपने वचन को आपके लिए जीवित कर दे – मानो वह सीधे आपसे बात कर रहा हो।

पाठ को ऊँची आवाज़ में और लगातार दो बार पढ़िए।

पाठ से ये प्रश्न पूछिए:

आप इस पाठ को क्या शीर्षक देंगे?

यह पाठ परमेश्वर और यीशु के बारे में क्या कहता है?

यह पाठ मनुष्यों के बारे में क्या कहता है?

हम इस पाठ से क्या सीखते हैं?

हमें क्या करना चाहिए?

यह वचन हमें कैसे उत्साहित करता है?

जब आप फिर मिलें, तो अपने अनुभवों और घटनाओं के बारे में बातचीत कीजिए।

ऐसे मसीहियों से संपर्क और संगति खोजिए, जो यीशु मसीह से प्रेम करते और उसका आदर करते हैं और बाइबल को मूल्यवान मानते, पढ़ते और गंभीरता से लेते हैं।